ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 | अंक- 20 | जनवरी-II | (पाक्षिक) | माउण्ट आबू | Rs. 8.00

जन सेवा में समर्पित पानीपत का नवनिर्मित ज्ञानमानसरोवर

सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी। साथ हैं ब्र.कु. अमीरचंद, ब्र.कु. हंसा, राज्यमंत्री कर्ण देव कम्बोज, ब्र.कु. भारत भूषण तथा पीछे समर्पित बहनें दिखाई दे रही हैं। सभा में शहर के प्रबुद्ध जन।

पानीपत-हरियाणा। ज्ञान मानसरोवर के उद्घाटन एवं ब्रह्माकुमारी बहनों के दिव्य समर्पण समारोह के अवसर पर 'परमात्म श्रीमत पर स्वस्थ एवं सुखी जीवन' विषयक भव्य कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि संस्था के प्रारम्भ में सन् 1937 में पिता श्री ब्रह्मा और हम लगभग 300 मुट्ठी भर भाई-बहनें थे। उनकी सच्ची लगन और तपस्या ने भारत तो क्या समस्त विश्व के 140 देशों में नैतिक मूल्यों की स्थापना की है। पिता श्री ब्रह्मा ने नारी शक्ति को आगे बढ़ाया। उन्होंने बताया कि ब्रह्माकुमारी संस्था के जितने भी मुख्य सेवाकेन्द्र हैं सबकी संचालिका हमारी बहनें हैं। दादी जी ने विश्व शांति का संदेश देते हुए कहा कि यदि विश्व में शांति स्थापित करना चाहते हैं तो हमें पवित्रता को अपनाना अति अनिवार्य है। जीवन से सारी बुराइयों का त्याग कर यदि राजयोग का अभ्यास प्रतिदिन करेंगे तो घर, समाज तो क्या सारे विश्व में शांति आ जायेगी। इस अवसर पर मुख्य अतिथि कर्ण देव कम्बोज,खाद्य राज्यमंत्री ने संस्था के सामाजिक तथा आध्यात्मिक कार्यों की बहुत-बहुत प्रशंसा की।

ज्ञान-मानसरोवर जो कि 5 एकड़ भूमि में निर्मित है। जिसके तीसरे फेज़ 'दादी चन्द्रमणि युनिवर्सल पीस ऑडिटोरियम' का उद्घाटन दादी जानकी के कमल हस्तों द्वारा हुआ। यहाँ समय प्रति समय समाज के सभी वर्गों की उन्नति के लिए आध्यात्मिक कार्यक्रम चलते रहते हैं।

उद्घाटन समारोह में कृष्ण लाल पंवार,ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर ने कहा कि ऐसा भव्य सभागार का होना हरियाणा के लिए गौरव की बात है। इस अवसर पर राजयोगी ब्र.कु. अमीर चन्द,डायरेक्टर,पंजाब ज़ोन, राजयोगी ब्र.कु. करूणा,चीफ ऑफ मल्टी मीडिया, एवं राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल ने विचार व्यक्त किये। साथ ही ब्र.कु. भारत भूषण ने सबका अभिनंदन किया। ब्र.कु. सरला दीदी ने सबका धन्यवाद किया। इस अवसर पर भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन हुआ।

अलौकिक दिव्य समर्पण समारोह

इस अवसर पर ग्यारह बहनों ने स्वयं को आजीवन दादी जानकी की उपस्थिति में ईश्वरीय सेवार्थ समर्पित किया। इन पवित्र बहनों के माता-पिता व सम्बन्धी इस भव्य समर्पण समारोह के साक्षी बने। सभी बहनों ने परमात्मा के विश्व परिवर्तन के महान कार्य में खुद को समर्पित करने की दृढ़ प्रतिज्ञा ली।

समाज को दुराचार व दुर्व्यवहार से बचाएं : ब्र.कु. उषा दीदी

'जीवन का आधार, गीता का सार' विषयक कार्यक्रम में शरीक हुए शहर के प्रबुद्धजन

रायपुर-छ.ग.। आज समाज में हर मोड़ पर दुर्योधन, दु:शासन और शकुनी जैसे पात्रों का सामना करना पड़ रहा है। गीता में वर्णित हर पात्र आज भी प्रासंगिक है। हमारे आंतरिक अच्छे गुण ही वास्तव में पाण्डवों के प्रतीक हैं, इन गुणों का अवगुणों अर्थात् कौरवों से प्रतिपल सामना होता है। पाण्डव अर्थात् भगवान से प्रीत बुद्धि। यह विचार अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त स्वप्रबंधन विशेषज्ञा राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी ने ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति सरोवर में आयोजित 'जीवन का आधार, गीता का सार' विषयक गीता ज्ञान रहस्य प्रवचन माला में व्यक्त किये। दीदी ने बताया कि कुछ लोग चुनौतियों का सामना करके जीवन को सफल कर लेते हैं। जो लोग चुनौती के वक्त सही निर्णय ले पाते हैं, उनके लिए सफलता के द्वार खुल जाते हैं। जो लोग दुविधाओं में घिरे होते हैं, वह असफल हो जाते हैं। ऐसे तनाव, हताशा और निराशा से बाहर निकालने में गीता बहुत मददगार सिद्ध हो सकती है। उन्होंने कहा कि कौरव अर्थात् अधर्म के वाचक। धृतराष्ट्र अर्थात् जो राजसत्ता को बाहुबल से प्राप्त करते हैं। गांधारी अर्थात् विवेक रूपी आँखों पर सदा अज्ञानता की पट्टी बांधे हुए। कौरवों के नाम 'दु' अक्षरों से शुरू होते हैं। दुर्योधन अर्थात् धन का दुरूपयोग करने वाला। कुरूक्षेत्र अर्थात् कर्मक्षेत्र। यह संसार ही कर्मक्षेत्र है।

कार्यक्रम के दौरान अपने विचार व्यक्त करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी। सभा में ध्यान पूर्वक सुनते हुए शहर के गणमान्य लोग।

सभी समस्याओं का समाधान गीता में निहित है। उन्होंने कहा कि गीता में कर्त्तव्य से विमुख होने की बात नहीं की गई है। गीता में जो योग सिखलाया गया है, वह जीवन में संतुलन रखने के लिए है। योग से हमारे कर्म और व्यवहार में कुशलता आती है। आज जो हमारे जीवन में असंतुलन आ गया है, उसका प्रमुख कारण योग से दूर होना है। उन्होंने कहा कि परिवार से लेकर विश्व की सभी समस्याओं का समाधान गीता में समाया है। इसीलिए गीता को सभी शास्त्रों में श्रेष्ठ माना गया है।

गीता सम्पूर्ण मानवता का शास्त्र : उषा दीदी ने कहा कि गीता भगवान का गाया हुआ गीत है। चूंकि परमात्मा सभी आत्माओं का पिता है इसलिए यह सम्पूर्ण मानवता का शास्त्र है। श्रीमद्भगवद् गीता मनुष्यों में अच्छे संस्कारों का सृजन करती है। गीता में ऐसा अमृत समाया हुआ है कि वह हरेक व्यक्ति को अमरत्व की ओर ले जाता है। गीता के सार को जिसने भी जीवन में धारण किया है, वह अमर हो गए हैं।

इससे पूर्व गृह सचिव अरूण देव गौतम, महापौर प्रमोद दुबे, विधानसभा सचिव चन्द्रशेखर गंगराड़े, पत्रकारिता वि.वि. के कुलपति डॉ. मानसिंह परमार, उद्योगपति राजीव अग्रवाल और क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

उनके कदम यहाँ... निगाहें वहाँ...

जैसे-जैसे जनवरी मास का आगाज़ होता है, तो कइयों के मानस पटल पर उस त्याग और तपस्वीमूर्त की छवि फिल्म के रील की तरह घूमने लगती है। वो महान पुरुष जिन्होंने अपने जीवन से वो कर दिखाया, जिसकी वजह से वे समस्त मानव जाति के लिए उत्कृष्ट व सुकून भरी ज़िन्दगी के राहगीर बन गए। अथवा यूँ कहें तो भी अतिश्योक्ति नहीं होगी, कि सारी मानव जाति के लिए वे ऐसा उदाहरण बने जिनके त्यागमय जीवन की नींव बहुत गहरी व हरेक के दिल पर छाप छोड़ने वाली रही। उनके जीवन के कई स्नेह संस्मरण व खुशियों भरी स्मृतियाँ, वो पवित्र पालना की झलकियाँ मानस पटल पर आये बिना नहीं रहतीं। हाँ, हम ऐसी महान विभूति प्रजापिता ब्रह्मा, जो कि ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक रहे, उनकी बात कर रहे हैं। वे सारे मानव मात्र के साथ हृदय से जुड़ गये। उनके हृदय की विशालता हर बाधाएँ, परिस्थितियाँ, जाति, रंग, देश-प्रदेश से तिरोहित करती हुई हरेक के दिल को छूने वाली रही। ये सारी चीज़ें जैसे उनके व्यक्तित्व के सामने बौनी सी रह गईं।

- ब्र.कु. गंगाधर

सोचने की बात ये है कि ऐसी असाधारण विभूति ने अपने जीवन को जीने के मापदण्ड को किस प्रकार नियमों की परिधि में बांधा होगा, ये कल्पना से भी परे है। फिर भी यहाँ जो हमने समझा वो आपके सामने रख रहे हैं...।

प्रजापिता ब्रह्मा ने एक संकल्प लिया कि इस सारे विश्व से दु:ख, अशांति का नामोनिशान मिट जाये। साथ-साथ समझा कि उसके लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी व त्याग पहले स्वयं मुझे करना होगा। कहते हैं परमात्मा को जब सृष्टि रचने का ख्याल आया, तो उन्होंने इस शुभ कार्य के लिए प्रजापिता ब्रह्मा को ही चुना। उन्हें ही श्रेष्ठ व सुंदर दुनिया बनाने का जिम्मा दिया। बस उसी क्षण प्रजापिता ब्रह्मा ने देह सहित हर समय, श्वास, संकल्प को प्रभु अमानत समझ इस कार्य में स्वयं को सम्पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। उन्होंने स्वयं को सिर्फ ट्रस्टी समझा। ट्रस्टी माना ही मेरा कुछ भी नहीं। ये अमानत है, और इस अमानत में खयानत ना पड़े, इस बात का मुझे ख्याल रखना, ये चरितार्थ करके बताया ब्रह्मा बाबा ने। ज़रा सोचिये, शरीर में रहते हुए इसके भान से परे रहना कितना कठिन है, लेकिन उनके जीवन से सदा हमने देखा कि वे वैसे ही थे। बिल्कुल ट्रस्टी की तरह अपने शरीर में रहे और अपना सर्वस्व विश्व कल्याण में लगाया।

शरीर में रहते ट्रस्टी बनना माना शरीर के भान से ऊपर उठकर रहना। मानो हम विचार करें कि शरीर की सारी कर्मेन्द्रियाँ जो कि अपने तरफ आकर्षित करती हैं, उससे भी परे रहना। जैसे आँख, कहते हैं आँख ऐसी कर्मेन्द्री है शरीर की, जिससे जीवन की 80 प्रतिशत ऊर्जा खर्च होती है। आँखें धोखा भी दे सकतीं और आँखें दूसरों को राहत भी दे सकती हैं। जैसे कोई सन्यासी सन्यास करके घर से बाहर चला जाता है। यदि वो वापस आ जाये तो उसको क्या कहेंगे? सन्यासी तो नहीं कहेंगे ना! बाबा ने एक बार विश्व कल्याणार्थ अपना सम्पूर्ण समर्पित कर दिया, तो फिर पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। इस त्याग की नींव ने ही उन्हें समस्त मानव जाति का हृदय सम्राट बना दिया। बाबा ने सुबह उठने से रात को सोने तक मनुष्य का जीवन कैसा हो, और कैसे परफेक्ट हो, वो ना सिर्फ बताया बल्कि करके दिखाया। जैसे कि खाना खायें तो कैसे! बाबा हमेशा परमात्मा की याद में और शांति से भोजन करते थे, बीच में बात नहीं करते थे। वे चलते थे, तो भी बड़ी शालीनता से। वे किसी से बात भी करते, तो हद से ऊपर उठकर। उनकी भावना सबके प्रति इतनी उच्च और शुभ थी, कि जो भी उनके सानिध्य में आता, वो

- शेष पेज 4 पर...

ड्रामा की नॉलेज व्यर्थ चिंतन, परचिंतन से फ्री कर देती है

ड्रामा में हर सीन न्यारी है, सेम नहीं है, इसलिए ड्रामा की नॉलेज ने व्यर्थ चिंतन, परचिंतन से फ्री कर दिया है। यह क्यों हुआ? क्या हुआ? ड्रामा। मैंने देखा है सवेरे से रात्रि तक कराने वाले को जो कराना है, करा ही रहा है, वो बहुत होशियार है। कराने वाला करा रहा है, यह मैं सिर्फ शब्द नहीं कहती हूँ परन्तु बड़ा वन्डर लगता है। कैसे करा रहा है! हम करने वाले अचल अडोल रूहानी तख्त पर साक्षी हो करके प्ले कर रहे हैं। ऐसे नहीं सिर्फ बैठ जाते हैं, पार्ट प्ले कर रहे हैं आर्ट के रूप में। ड्रामा की नॉलेज से बाबा को साथी बनाया है, ड्रामा की नॉलेज से अचल अडोल रहने का नैचुरल नेचर बन जाता है, तो कोई भी बात हो वो बड़ी नहीं लगती है। साक्षी होकर देखें तो बहुत अच्छा है। हमारी यह गॉडली स्टूडेंट लाइफ बहुत अच्छी है। मैं भी सौ साल से ऊपर की हो गई हूँ, अब भी स्टूडेंट लाइफ है, माना सारी लाइफ ही स्टडी में सफल हो रही है। मैं कभी टायर्ड नहीं हुई तो रिटायर्ड क्यों होंगी! सेवाधारी के हिसाब से पहले त्यागी फिर तपस्वी फिर सेवाधारी यह तीनों ही साथ-साथ हो। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है। हिम्मते बच्चे मददे बाप, नियत साफ मुराद हासिल। याद से याद मिलती है, क्योंकि सच्ची दिल की याद में कोई फरियाद नहीं होती है। यह याद समय अनुसार दुश्मन को भी मित्र बनाने वाली है। सारे संसार में हमारा कोई दुश्मन नहीं है। सभी मित्र हैं। तो हरेक दिल से पूछे मैं कौन हूँ, मेरा कौन है! जब मैं आत्मा हूँ तो देह से न्यारा हूँ। तो बाबा कहता है हे आत्मा! तुम मेरी सन्तान हो, परंतु बचपन के दिन भुला न देना। हरेक को बहन भाई की दृष्टि से देखो, यह बहन भाई का सम्बन्ध भी संगमयुग पर कितना फायदे वाला है। एक दो को देख कितनी खुशी होती है। तो हम सबकी स्टूडेंट लाइफ है, भले कोई की उम्र साठ से ऊपर हो या कोई उम्र में छोटा हो, पर वो भी स्टूडेंट, वो भी स्टूडेंट। साक्षी होकर देखते हैं, हमारा आपस में स्टूडेंट लाइफ में सम्बन्ध बहुत अच्छा है। बैठके आपस में रूहरूहान करते हैं। रूहरूहान में ज्ञान की गहराई में जाते हैं। जितना गहराई में जाते हैं तो लगता है बाबा को ज्ञानी तू आत्मा प्रिय लगती है। यह देह के सम्बन्ध से न्यारा बनाने वाली नॉलेज है। तो संगमयुग पर कोई-कोई बातें इतनी अच्छी लगती हैं जो जीवन यात्रा में कदम-कदम पर कमाई करा रही हैं। समय की पहचान माना स्वयं की पहचान। अभिमान नहीं है, देही-अभिमानी की स्थिति से सहजयोगी हैं।

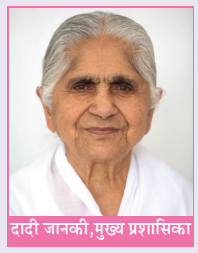
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

ब्रह्माबाबा के देह नहीं, गुणों से संबंध

ब्रह्माबाबा के हर कर्त्तव्य से हमारा प्यार है। हम बाबा का चित्र इसीलिए रखते हैं क्योंकि इस चित्र द्वारा ही विचित्र हमको मिला। ब्रह्माबाबा का कभी भी हम चित्र देखते हैं तो हमारा अटेंशन ब्रह्माबाबा के तन में नहीं जाता, लेकिन ये किसका माध्यम है – उस तरफ हमारी बुद्धि जाती है। कोई दूसरे लोगों के मुआफिक मूर्ति पूजा के रीति से हम ब्रह्माबाबा का चित्र नहीं रखते हैं। लेकिन ब्रह्माबाबा का चित्र बाबा के कमरे में इसीलिए रखते हैं कि हमको इस तन द्वारा शिवबाबा की नॉलेज मिली है तो उसकी स्मृति आती है। शिवबाबा ने हमको क्या से क्या बना दिया! तो चित्र हम नहीं देखते लेकिन चित्र द्वारा विचित्र को देखते हैं। बाबा के चित्र के सामने भी कोई क्वेश्चन वा समस्या ले करके जाता है तो उसे उसका उत्तर मिलता है। तो ब्रह्माबाबा के माध्यम द्वारा शिवबाबा आपको उत्तर देता है और अनुभव होता है जैसे सचमुच बाबा हमारे से बोल रहा है। क्योंकि हमारी भावना ही वह है कि शिवबाबा हमसे ब्रह्मा बाबा द्वारा मिल रहा है। तो बाबा हमको भावना का फल ब्रह्माबाबा द्वारा देता है। माध्यम को जानना तो पड़ेगा ना। इसीलिए हमारा ब्रह्मा बाबा से भी इतना ही प्यार है और शिवबाबा से भी इतना ही प्यार है। ब्रह्मा की आत्मा से हमारा कई जन्मों का कनेक्शन है। स्वर्ग में राज्य भी ब्रह्माबाबा के साथ करेंगे। तो आदि आत्मा होने के नाते से और जगतपिता होने के नाते से, साकार ब्रह्मा साकार सृष्टि का पिता है और इस आत्मा के साथ हमारे कई जन्मों का कनेक्शन है, उस नॉलेज से हम ब्रह्माबाबा को देखते हैं। बाकी शरीर की रीति से सोल कॉन्शियस हुए बिना बाबा के कमरे में आप बैठो तो आपको कुछ भी अनुभव नहीं होगा। जब हम अपनी ही बॉडी को भूलने की कोशिश करते हैं तो ब्रह्मा बाबा की बॉडी को क्यों देखें! तो हमारा देह के साथ नहीं, लेकिन ब्रह्माबाबा के कर्त्तव्य, विशेषता, गुण, शक्तियों के साथ सम्बन्ध हैं, इसीलिए हमको अनुभव होता है। कोई कमज़ोरी होगी तो ऐसे अनुभव करेंगे जैसे लाइट माइट की किरणों से बाबा हमको शक्ति दे रहा है व हमारी कमज़ोरी मिटती जा रही है। साथ ही यह भी अनुभव होता है कि अव्यक्त रूप में ब्रह्माबाबा बहुत पालना दे रहे हैं। ऐसा अनुभव करा रहे हैं जैसे साकार में पालना दे रहे हैं। तो इस अनुभव को बढ़ाओ और मुरली को मनन करो। कई कहते हैं हमको मनन करने का टाइम ही नहीं मिलता। लेकिन कई काम ऐसे होते हैं, जैसे आप नहा रहे हो, कपड़े धुलाई कर रहे हो, खाना बना रहे हो, तो उस समय उसमें फुल बुद्धि लगाने की तो बात ही नहीं है। ऐसे ऐसे टाइम पर आप मनन कर सकते हो। हाँ कोई कोई का काम होता है फुल दिमाग लगाने का, तो वह भी कितना, 8 घण्टा। 8 घण्टा जॉब करो, 8 घण्टा आराम करो, फिर जो समय बचता है उसमें सेवाकेन्द्र की सेवा करो, ज्ञान-योग सिखलाओ। उसमें भी आपकी कमाई है।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

ईगो की समाप्ति के लिए विशेषता देखें...

श्रेष्ठ कर्म के लिए सबसे पहले चाहिए दैवी गुणों की धारणा। दैवी गुणों की धारणा में कमी आने का मूल कारण है ईगो(अहंकार)। अनुभव कहता है, ज्ञान बहुत सुन लो, योग बहुत अच्छा लगाओ, बाबा को प्यार करो, परन्तु अगर अन्दर में ईगो है, तो वह सब बातों को ढ़क देगा, नुकसान कर देगा। सबसे पहले हमने देखा कि पिताश्री, जिनके पास इतनी अथॉरिटी थी, इतना हम बच्चों के लिए मेहनत करते समझाते लेकिन हमने कभी उनके व्यवहार में ईगो नहीं देखा। ईगो अभिमान पैदा करता, ईर्ष्या पैदा करता, क्योंकि देह अभिमान से ईगो आता है। हमें कभी ईगो न आये, इसकी अनेक युक्तियाँ बाबा ने बताई हैं। पहले तो हमारी बुद्धि में रहता कि इस ज्ञान की पढ़ाई में मैं सदैव स्टूडेन्ट हूँ। दूसरे सब समझते हम सब स्टूडेन्ट पढ़ाई पढ़ रहे हैं। मैं होशियार हूँ यह मैं कभी नहीं सोचती। मेरे से बहुत होशियार हैं। जितना जो होशियार है, मुझे उनसे सीखना है। हर एक, कोई किसमें कोई किसमें होशियार है, मुझे हर एक से स्टूडेन्ट बन गुण ग्रहण करने हैं, स्टडी करनी है, इतना होशियार होना है, चाहे कोई छोटा काम करता, चाहे कोई बड़ा करता है। चाहे कोई भाषण करता, चाहे कोई कर्मणा सेवा करता, लेकिन वह कितना उस बात में परफेक्ट है, मुझे उसकी परफेक्शन अपने में लानी है। जब मैं बुद्धि में रखती कि हर बात में मुझे परफेक्ट होना है तो कौन किस बात में परफेक्ट है, वह मुझे देखना है। ऐसा नहीं सोचती कि यह ऐसा है, वैसा है। मैं होशियार हूँ या मैं यह नहीं सोचती मैं दादी हूँ। हम सदैव स्टूडेन्ट हैं। कोई का कैसा भी व्यवहार है, चलन है, दृष्टि-वृत्ति है, हमें उनसे सीखना है। बाप शिक्षक है, पर हम हर एक से शिक्षा लें तो हमारी दृष्टि ऐसी रहती जिससे न खुद में ईगो आता, न कभी किसी बात के लिए नफरत आती है। यह भी फाइन है, गुड है। इनसे यह अच्छाई लेनी है, बुराई नहीं लेनी है। ईगो बुराई पैदा करता है। बाबा कहते कभी किसी को बुरे भाव से नहीं देखो। बुराई सबमें है, तुम बुराई नहीं देखो, अच्छाई देखो। न बुराई को बुद्धि में लाओ। बुद्धि में बुराई आने से चिन्तन चलेगा। चिन्तन चलने से दृष्टि जायेगी, फिर वैसा व्यवहार होगा फिर अन्दर का प्यार टूट जायेगा। लेकिन यदि उसके लिए सद्भावना है तो उसमें जो भी शुभ है वह लेना है अशुभ नहीं। तो यह नॉलेज अथवा योग हमको श्रेष्ठता, अच्छाई वा ऊँचाई लेना सिखाता है। श्रेष्ठता लेना ही गॉडली स्टूडेंट बनना है। सिर्फ कोर्स पूरा किया माना मैं स्टूडेंट हूँ। छोटे वा बड़े जिसमें जो विशेषता है वह लेना–इसका ही नाम है गॉडली स्टूडेन्ट। बाबा गुणों का भण्डार है। परन्तु देवतायें भी सर्वगुण सम्पन्न हैं। हमें बाप समान बनना है तो हमें इतने गुण धारण करने हैं, सभ्यता से चलना है-यह भी बहुत बड़ा गुण है। सभ्यता वाले मधुर बोलेंगे, धीरे चलेंगे। काम करेंगे तो बहुत प्यार से, देखेंगे तो भी सम्मान से। सभ्यता लव सिखाती, रिस्पेक्ट देना सिखाती, मधुरता सिखाती है। हर बात में सभ्यता की दरकार है। यह श्रेष्ठ मैनर्स हैं। सभ्यता वाले के पास ईगो नहीं आता है।

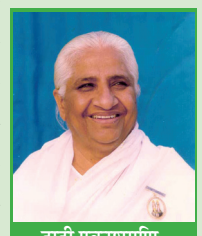
दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

स्वास्थ्य घुटने ... मत बदलिये

मनुष्य जीवन में उसकी आयु के 50 साल के बाद धीरे-धीरे शरीर के जोड़ों में से लुब्रीकेन्ट्स एवं कैल्शियम बनना कम हो जाता है। जिसके कारण जोड़ों का दर्द, गैप, कैल्शियम की कमी

आदि समस्याएँ सामने आती हैं, जिसके चलते आधुनिक चिकित्सा आपको ज्वॉइन्ट रिप्लेस करने की सलाह देती है, तो कई आर्थिक रूप से सम्पन्न लोग यह मानते हैं कि हमारे पास तो बहुत पैसे हैं तो घुटने चेंज करवा लेते हैं। किंतु क्या आपको पता है कि जो चीज़ कुदरत ने हमें दी है, वो आधुनिक विज्ञान या कोई भी साइंस नहीं बना सकती।

★ अप्राकृतिक ज्वॉइन्ट फिट करवा कर थोड़े समय 2-4 साल तक ठीक हो सकते हैं, लेकिन बाद में आपको बहुत ही तकलीफ होगी।

★ ज्वॉइन्ट रिप्लेसमेंट का सटीक इलाज आज हम आपको बता रहे हैं, जिसे आप ऐसे हज़ारों ज़रूरतमंद लोगों तक पहुँचाएं जो रिप्लेसमेंट के लाखों रुपये खर्च करने में असमर्थ हैं।

★ 'बबूल' नाम के वृक्ष को आपने ज़रूर देखा होगा। यह भारत में हर जगह बिना लगाए ही अपने आप खड़ा हो जाता है।

★ अगर यह बबूल नाम का वृक्ष अमेरिका या तो विदेशों मे इतनी मात्रा में होता, तो आज वही लोग इनकी दवाई बनाकर हमसे हज़ारों रुपये लूटते। लेकिन भारत के लोगों को जो चीज़ मुफ्त में मिलती है, उनकी उन्हें कोई कदर नहीं है।

प्रयोग इस प्रकार करें:-

★ बबूल के पेड़ पर जो फली (फल) आती है, उसको तोड़कर लायें। आपको शहर में नहीं मिल रहे तो किसी गांव जाएं, वहाँ जितने चाहिये उतने मिल जायेंगे, उसको सुखाकर पाउडर बना लें।

★ सुबह 1 चम्मच पाउडर गुनगुने पानी के साथ लें। इसे खाली पेट लें और इसे लेने के एक घण्टे बाद ही किसी अन्य पदार्थ का सेवन करें।

★ सही रूप से केवल 2-3 महीने सेवन करने से आपके घुटने का दर्द बिल्कुल ठीक हो जायेगा। आपको घुटने बदलने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

(डॉ.राहुल जैन) नेचरोपैथी एवं एक्यूप्रेसर, जयपुर, 09460555101

हमें सौ प्रतिशत सत्य कौन बतायेगा?

प्रश्न: हम परमात्मा को तलाशेंगे कैसे? कौन हमें उनसे मिलवायेगा?

उत्तर: अगर हम आपके परिवार के उन सदस्यों को यहाँ बुलाते हैं, जो आपको बहुत अच्छी तरह से जानते हैं और उनको कहें कि आपका परिचय दें। वे सब एक ही व्यक्ति के बारे में बतायेंगे, लेकिन एक जैसा नहीं बतायेंगे। जो सबसे ज़्यादा करीब हैं, जो आपको बहुत ही अच्छी तरह से जानते हैं वे भी आपका परिचय एक तरह से नहीं देंगे। उनका अपने रिश्ते के अनुसार परिचय बदलता जायेगा। वे सभी आपके बारे में एक जैसा नहीं सुनायेंगे लेकिन उनमें से कोई भी गलत नहीं होगा। लेकिन क्योंकि फर्क आ रहा है, तो इसका मतलब कोई भी 100 प्रतिशत सही नहीं होगा। इसलिए सबके विचारों में अंतर होगा। आपका यथार्थ परिचय कि आप असल में कौन हैं? क्या महसूस करते हैं? क्या सोचते हैं? आप सारा दिन क्या करते हैं? आपका सही परिचय कौन देगा? आप खुद देंगे ना! वो सब आपके इतने करीब हैं लेकिन वे यथार्थ परिचय नहीं दे पा रहे हैं। कोई गलत नहीं होगा, लेकिन कोई भी 100 प्रतिशत सही भी नहीं होगा। जब तक आप अपना 100 प्रतिशत सही परिचय खुद नहीं देंगे तब तक स्पष्ट नहीं होगा। हज़ारों वर्षों से धर्मात्माओं ने, महात्माओं ने, संत आत्माओं ने, अलग-अलग लोगों ने आकर हमें उस परमात्मा का परिचय दिया है। हरेक ने उसे जिस दृष्टि से देखा, जिस सम्बन्ध से उसको पहचाना और जिस सम्बन्ध से उसको जाना उसी अनुसार उसका परिचय दिया। अलग-अलग किसी की बात नहीं कर रहे थे, वे सब एक ही शक्ति का परिचय दे रहे थे। उनमें से कोई भी गलत नहीं था जिन्होंने भी परमात्मा का परिचय दिया, लेकिन फिर भी सबके परिचय में थोड़ा-थोड़ा अन्तर आ गया, इसका मतलब कोई भी 100 प्रतिशत सही नहीं था। उन्होंने जिस दृष्टिकोण से देखा वैसा परिचय दिया। तो अब परमात्मा का सही 100 प्रतिशत यथार्थ परिचय कौन देगा? परमात्मा खुद देंगे। अगर आपको परमात्मा का सही परिचय चाहिए तो वो आपको तभी मिलेगा जब वो खुद आकर अपना परिचय देगा। अगर हम में से कोई भी उसका परिचय देते हैं तो फिर भी थोड़ा सा अंतर आयेगा। परमात्मा जब स्वयं आकर अपना परिचय देते हैं तो वो परिचय बड़ा सरल होगा। हमने तो परमात्मा का परिचय बड़ा जटिल कर दिया था क्योंकि हम सत्य नहीं जानते हैं। लेकिन इस सारे सृष्टि चक्र में एक ऐसा समय आता है जब परमात्मा स्वयं आकर अपना परिचय देते हैं और वो परिचय बहुत आसान और 100 प्रतिशत यथार्थ होता है। और जब आप 100 प्रतिशत यथार्थ रूप से किसी को जान लेते हैं, फिर उसके साथ रिश्ता जोड़ना बहुत सरल हो जाता है। भगवान रचयिता है और प्रकृति उसकी रचना है फिर उसकी रचना को ही रचयिता हम कैसे मान सकते हैं? जैसे एक कुम्हार है बहुत सुंदर सा मटका बनाता है, उस मटके को देखकर हमें उसकी याद आ सकती है लेकिन वो परमात्मा नहीं है। फिर हम कहते हैं आत्मा सो परमात्मा मतलब आत्मा ही परमात्मा है। एक तरफ हम कहते हैं तुम मात-पिता हम बालक तेरे और फिर दूसरी तरफ कहते हैं आत्मा ही परमात्मा है। बच्चा पिता के जैसा हो सकता है लेकिन बच्चा ही पिता बन जाये, वो संभव नहीं है। वो किसी और रचना का पिता बन सकता है लेकिन वो अपना ही पिता नहीं बन सकता। उसका पिता उसका अपना ही रहेगा। फिर कहते हैं कि परमात्मा के ही अंश हैं हम और परमात्मा में ही समा जायेंगे या हम कहते हैं कि कण-कण में परमात्मा है। अधिकतर लोग आजतक ये मानते हैं कि हरेक के अंदर परमात्मा है और उसके पीछे भी कुछ भाव रहा होगा। लेकिन हमें अपने आप से पूछना होगा कि जो सर्वशक्तिवान है, जो ऑलमाइटी अथॉरिटी है, जो शांति का सागर है, जो प्रेम का सागर है, पवित्रता का सागर है वो मेरे अंदर बैठा है? अगर वो मेरे अंदर बैठा है तो मेरा मनोभाव क्या होना चाहिए? अगर शांति का सागर आपके अंदर बैठा है तो क्या क्रोध आ सकता है, दु:ख आ सकता है, चिंता हो सकती है, जो दृष्टिकोण आज हमारा है उसका अंश भी नहीं हो सकता।

-ब्र.कु.शिवानी,जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

वेगुसराय-बिहार। 'अलविदा तनाव तथा तनावमुक्ति राजयोग शिविर' के दौरान मंच पर शिव ध्वज लहराते हुए मेयर उपेन्द्र सिंह, पूर्व मंयर संजय सिंह, सेंट जोसफ स्कूल के डायरेक्टर अभिषेक सिंह, अक्षय कुमार साहू,आर.एम.,एल.आई.सी., राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. पूनम,इंदौर, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कंचन तथा अन्य।

शिमला-हि.प्र.। राजयोग शिविर के पश्चात् समूह चित्र में कमाण्डेंट ऋषि राज सिंह, असिस्टेंट कमाण्डेंट सुरेन्द्र भट्ट, एज्युकेशन ब्रांच हेड चन्द्र शेखर पाण्डेय तथा विभिन्न बटालियन्स के जवानों के साथ ब्र.कु. सुनीता तथा ब्र.कु. यशपाल।

नेपाल-फत्तेपुर। 'तनाव मुक्ति' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मेयर उत्तम गौतम, वडा अध्यक्ष नारायण आचार्य, ब्र.कु.भगवान,शांतिवन ब्र.कु. भगवती तथा ब्र.कु. नीरा।

अमरोहा-उ.प्र.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् नवनिर्वाचित पालिकाध्यक्ष अतुल जैन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अर्चना तथा ब्र.कु. पूनम।

बाढ़-बिहार। 'अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण अभियान तथा नई शाखा' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए भाजपा अध्यक्ष डॉ. सियाराम, आर.जे.डी. प्रेसीडेंट राजीव, ब्र.कु. ज्योति तथा अन्य।

सहारनपुर-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ एवं ब्र.कु. रजनी तथा ब्र.कु. रानी के समर्पण समारोह में मंचासीन हैं ब्र.कु. देव,शांतिवन, ब्र.कु. प्रेम बहन,पंजाब, ब्र.कु. अमीरचंद, सांसद राघव लखनपाल, एस.एस.पी. बबलू कुमार, जिला मजिस्ट्रेट पी.के. पाण्डेय, ब्र.कु. कोमल तथा ब्र.कु. अनीता।

काठमाण्डू-नेपाल। विश्वशान्ति भवन ठमेल सेवाकेन्द्र के स्वर्ण जयंती महोत्सव में नेपाल की राष्ट्रपति महामहिम विद्या देवी भण्डारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी। साथ हैं ब्रह्माकुमारीज़ के अति. सचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन, राजयोग प्रशिक्षक ब्र.कु. रामसिंह तथा ब्र.कु. किरण।

झज्जर-हरियाणा। 'गीता महोत्सव' के दौरान आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं आध्यात्मिक पुस्तकों का अवलोकन करते हुए हरियाणा के वन एवं लोकप्रशासन मंत्री राव नरबीर सिंह। साथ हैं डी.सी. एस.गोयल, ए.डी.सी. सुशील श्रवण, ब्र.कु. संतोष व अन्य।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ब्र.कु. अनुसुइया, भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व खिलाड़ी बिशन सिंह बेदी, ब्र.कु. आशा दीदी, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, फिल्म अभिनेत्री एवं समाज सेविका प्रियंका कोठारी, ब्र.कु. चक्रधारी दीदी तथा ब्र.कु. रोहित।

कोटा-कुन्हाड़ी(राज.)। सी.आर.पी.एफ. कमाण्डेंट चेतन चिता को राष्ट्र के प्रति निष्ठा एवं समर्पण भाव के लिए सम्मानित करने के पश्चात् उनके साथ मंचासीन हैं उनके पिता रामगोपाल चिता, ब्र.कु. उर्मिला तथा अन्य।

आगरा-शास्त्रीपुरम। सेवाकेन्द्र के वार्षिक समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए ज़ोन इंचार्ज ब्र.कु. शीला, ग्रामीण विद्यायक हेमलता दिवाकर, नंदकिशोर मृगरानी, सत्येन्द्र सिंह, ब्र.कु. ज्योत्सना, ब्र.कु.सरिता, ब्र.कु.गीता, ब्र.कु.मधु।

लखनऊ-मुंशी पुलिया(उ.प्र.)। 'कर्मों की गुह्य गति' पुस्तक का विमोचन करते हए ब्र.कु. जयश्री तथा स्मार्क चैप्टर परिवार के सदस्य।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

सेवा हमारी है, हमारे का अर्थ यहाँ तन से नहीं मन से है। जीवन उन बातों से बिल्कुल भी अछूता नहीं है जिन्हें हम जानते तो हैं लेकिन अमल नहीं करते। सबसे पहले दुनिया में लोग जब प्रात:काल उठते हैं, तो थोड़ा बहुत मंत्र जप कर परमात्मा का नाम लेते हैं और नाम लेते-लेते यह कहते कि हमारा आज का दिन अच्छा गुज़रे। आप सोचिये ज़रा, सुबह का वो पाँच मिनट हमें इतनी शक्ति देता है कि पूरे दिन को हम ऊर्जान्वित कर पाते हैं। इसे कहते हैं सकारात्मकता से शुरुआत।

समाज इन बातों पर अमल भले ना करे लेकिन हमारे बड़े बुजूर्गों का अनुभव यही कहता है कि जब हम अपने आपको अनुभवों के साथ जोड़ते जाते हैं तो हम शक्तिशाली होते जाते हैं। कुछ हद तक उनका अनुभव हम सारे बच्चे भी करते आये, लेकिन पूरी तरह से समझ नहीं पाये थे। उनका हर एक अनुभव एक शक्ति के रूप में हमारे साथ चलता है, चला आ रहा है। आज भी अगर उन अनुभवों को हम थोड़ा सा साइंस की कसौटी पर लेकर चलें तो चमत्कार हो सकते हैं। उदाहरण के रूप में - एक बुजूर्ग का अनुभव है कि हम दिन-रात प्रकृति के बीच में रहते हैं, खेतों के बीच में रह हरियाली देखते हैं और उन्हें देखते बहुत दूर-दूर तक हमारी नज़र जाती है। आप सोचिये ज़रा, जब हम बहुत दूर तक देखते हैं तो हमारा दायरा बहुत बड़ा हो जाता है। इतना बड़ा कि कोई अवरोध नहीं, किसी तरह का कोई विघ्न नहीं, सिर्फ हम विस्तार को देख रहे हैं। उनका कहना था कि जितना हम खुली चीज़ों को देखते हैं उतना हमारा मन भी खुला होता जाता है। एक प्रैक्टिकल भी उन्होंने कराया कि एक बच्चे को खेतों के बीच में पढ़ने के लिए बिठाया जाये और दूसरे बच्चे को कमरे में बिठाया जाये जो 10x10 का हो। आप देखेंगे जो बच्चा खुले में पढ़ रहा हो, ओपन

स्पेस में होगा, उसका माइण्ड बहुत ब्रॉड होगा। वो चीज़ों को जल्दी ग्रहण कर लेगा, समझ लेगा। ऐसा नहीं कि कमरे में बैठा बच्चा उतना आसानी से नहीं समझेगा, समझेगा अवश्य, परन्तु उसका आई-क्यू लेवल घट जाता है। ये सारी बातें आपको भले थोड़ी सी अलग लगेंगी लेकिन ये बातें आज के दौर में सभी माइण्ड मैनेजमेंट ट्रेनर्स रखते हैं कि आप बच्चे को खुला स्पेस दो, उसे ज़्यादा नहीं बोलो। अब ये बातें क्या आपको नई लगती हैं..! नहीं ना। क्योंकि ये हैं पहले की। लेकिन आज हम उसको फिर से री-न्यू करने की कोशिश कर रहे हैं। इसीलिए आप देखो जितने भी बड़े-बड़े साइंटिस्ट हुए, इंजीनियर्स हुए, उन सबने जो भी रिसर्च किया वो एकांत में खुले स्पेस में किया। क्योंकि वहां पर कुछ भी ऐसा हर्डल नहीं है। बस करते गये। शुरू में ज़रूर थोड़ी समस्या आती है लेकिन बाद में वो सबके लिए एक इतिहास बन जाता है। कहने का भाव यह है कि मन हमारा आज बहुत सारी छोटी-छोटी रुकावटों के कारण विकसित नहीं हो पा रहा है, जैसे वाट्सएप्प, फेसबुक, यू-ट्यूब, इसके अलावा कमरे से बाहर नहीं निकलना, अंदर ही बैठे रहना। ये कुछ कारण हैं जो बच्चों को मानसिक रूप से बीमार कर रहे हैं। अनुरोध यह है कि थोड़ा अपने प्राकृतिक स्वरूप में हम पहले खुद को लायें, फिर उसी हिसाब से बच्चों को भी गाईड करें, ताकि आने वाले समय में वो कुछ अच्छा कर जायें। आज इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का दौर है और आप उसमें कभी भी जाकर सर्च कर सकते हैं कि क्या हमारे लिए ये सारी चीज़ें अच्छी हैं, हमारे माइण्ड को विकसित करती हैं? हमारे हिसाब से तो बिल्कुल भी नहीं। क्योंकि ये सूचनाएं हमको और ज़्यादा गर्त में लेकर गई हैं, ना कि हमारा विकास हुआ है। तो जागो और मन को जगह दो।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-8 (2017-2018)

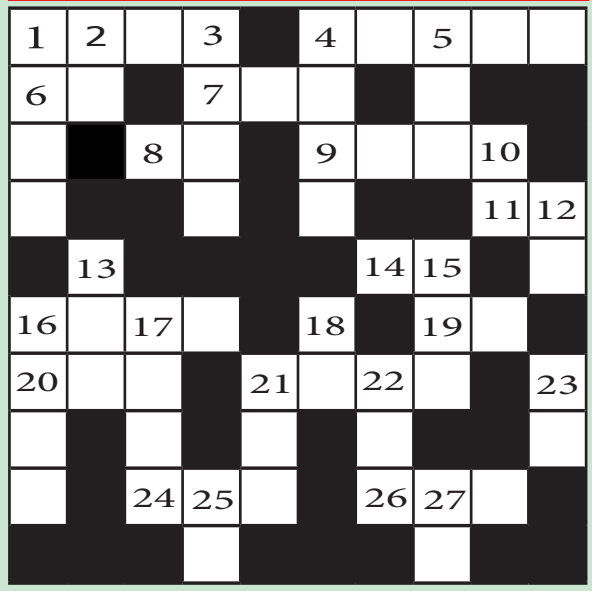

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. आज्ञा, आदेश (4)
2. तुम बच्चों को माया.... जगतजीत बनना है, विजय (2)
3. नसीब, भाग्य (4)
4. पशु, प्राणी, पशुओं सा व्यवहार करने वाला (4)
5. भारत की एक मुख्य नदी (3)
10. गीला, आर्द्र (2)
12. जीव, आत्मा (2)
13. विनाश, नाश, भयंकर बर्बादी (3)
15. बलवान, शक्तिशाली (3)
16. जुगाली करना, मनन-चिन्तन (4)
17. पायल की आवाज़ (4)
18. शक्ति, ताकत (2)
21. पुकारना, आवाज़ देना (3)
22. ज्वर, दिल का गुबार, भड़ास (3)
23. इन्कार, मनाही, रोकना (2)
25. चमड़ी, त्वचा, खाल (2)
27. मैं का बहुवचन (2)

बायें से दायें

1. मनुष्य से देवता बनने के लिए दैवी....धारण करो, मैनर्स (4)
4. बाबा जानी....है (5)
6. लीन, तल्लीन (2)
7. कहा गया वाक्य, वचन (3)
8. सरिता, सरि, नद, शैलजा (2)
9. आशीर्वाद,....लुटाने वाले (4)
11. आनन्द, सुख, लुत्फ (2)
14. महीना, 30दिन (2)
16. फँसना, अटकना (4)
19. समाप्त, केवल, पर्याप्त (2)
20. ज्ञान की धारणा से ही तुम बच्चे....और पूजन योग्य बनते हो (3)
21. ज्ञान की....बन टिकलू-टिकलू करते रहना है (4)
24. निर्माण, बनाना, बनावट (3)
26. ठहरना, स्थिर होना, निर्वाह करना (3)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन।

शिव अवतरण

ओमशान्ति मीडिया | महाशिवरात्रि विशेषांक | माउण्ट आबू

परमात्मा का शुभ आगमन समय चक्र में!!!

समय चक्र में ना तो समय से पहले कुछ प्राप्त होना है, ना तो समय बीत जाने के बाद। अगर कुछ प्राप्त होगा, तो समय रहते। इसकी गति इतनी तीव्र है कि उसे पहचानने के लिए हमें समयातीत होना होगा। जीवन को समय से पहले समय रहते तैयार कर उस शुभ अवसर को लाना होगा जिसके साथ सुख शांति और आनंद के तार जुड़े हुए हैं। आज जुड़ाव कहीं और है, इसलिए प्राप्ति दु:खदायी है। असंयमित जीवन को फिर से संयमित जीवन में परिवर्तित करने हेतु परमपिता परमात्मा शिव अवतरित होते हैं। बस हमें उन्हें पहचान कर, उनसे सम्बन्ध जोड़कर अपने जीवन को बदल लेना है व श्रेष्ठ बनाना है। तो अब हम आप और सभी समय चक्र में इस शुभ अवसर का लाभ लेकर अपने आप को धन्य बनायें। अब नहीं तो कब नहीं...।

मनुष्य की जीवन यात्रा में कई चक्र पुन: रिपीट हुआ करते हैं। जैसे आपने देखा होगा कि सुबह होती है, फिर दोपहर, फिर शाम, फिर रात, ये दिवस चक्र है। इसी प्रकार से सोमवार से रविवार, फिर रविवार से सोमवार, ये सप्ताह चक्र है। ऐसे ही मौसम चक्र, ऋतु चक्र, मास चक्र, वर्ष चक्र, ये आते ही रहते हैं। कुल मिलाकर एक शब्द में अगर कहा जाए तो हर एक चीज़ अपने स्थान पर फिर से अपना एक साइकिल पूरा करके आती है। ऐसे ही इस सृष्टि चक्र में एक समय था, जिसको लोग सतयुग कहते थे, इसलिए हम सृष्टि चक्र को काल चक्र के साथ जोड़ सकते हैं। जो सार रूप में मानव मन की चार अवस्थाओं से बना हुआ माना जा सकता है। जिसको क्रमश: सतयुग, त्रेता युग, द्वापरयुग और कलियुग कहते हैं। इन अवस्थाओं में जो सतयुग और त्रेता की अवस्था थी, उस काल खंड में मानव बहुत शांत व सुखी था। लेकिन चक्र फिरने के साथ साथ मन की अवस्था भी बदलनी शुरू हो गई। उदाहरण के लिए, जो पूरे दिन में इंसान होता है, उसकी प्रकृति, उसका स्वभाव दिन में कुछ और होता है, लेकिन रात को उसी इंसान से मिलो तो उसकी अवस्था कुछ और होती है, ड्रेस अलग होता है, भाव अलग होता है व सोच अलग, लेकिन इंसान वही होता है। उसकी मनोस्थिति बदलती नज़र आती है। ऐसे ही जब सतयुग त्रेता का समय होता है, तब दिन की अवस्था होती है, उस समय सब अच्छा होता है, सबकुछ दिखाई देता है। जैसे जैसे रात अर्थात् द्वापर और कलियुग आता है, वैसे वैसे हमारी अवस्था में परिवर्तन आता है। इसका एक और उदाहरण है, कि आज भी लोग कहते हैं कि भारत सोने की चिड़िया था, अर्थात् चारो तरफ सुख-शांति-सम्पत्ति प्रचुर मात्रा में थी, शरीर स्वस्थ था व इंसानों को हम एक ऊँची अवस्था में देखते थे जिन्हें हम देवता कहते हैं। समय बीतने के उपरांत हम देवतायें नीचे की ओर सृष्टि चक्र में आये, उतरते चले गये और एक साधारण मनुष्य के रूप में जीवन जीने लगे। चूंकि यह चक्र बहुत धीमी गति से चलता है, अब वो रात की अवस्था पुन: परिवर्तित होने वाली है। आपको यह जानकर बहुत खुशी होगी कि ये चक्र फिर से रिपीट हो रहा है और परमात्मा द्वारा फिर से इस सृष्टि चक्र में समय के बाद और समय के पहले का जो समय है, जिसको हम संगमयुग कहते हैं, उसमें परमात्मा आकर अपना सत्य परिचय देकर हमें सतयुगी दुनिया का मालिक पुन: बनाते हैं। इस संगमयुग का समय हीरे जैसा माना जाता है। इस समय जिसने जो अवस्था बना ली, वो बना ली। हम सबकी यही चाह है कि राम राज्य इस धरा पर हो, जहाँ सुख-शांति-खुशी का साम्राज्य हो। तो हमें आपको ये बताते हुए अति हर्ष हो रहा है कि ऐसी दुनिया की स्थापना की घड़ी इस समय चक्र में आ पहुँची है जब स्वयं परमात्मा शिव का अवतरण इस महापरिवर्तन हेतु हो चुका है। तो आप भी तो ऐसी दुनिया में चलना चाहोगे ना...! और उसके लिए समय बहुत थोड़ा रह गया है। हमें समय से पहले तैयार होना ही पड़ेगा।

अरसों से बिछड़ा हुआ साथी जब कभी हमसे मिलने आता है, तो हम फूले नहीं समाते। ऐसे ही हमारा परमात्मा पिता जो अरसों से हमसे बिछड़ा हुआ है, वो अब हमसे मिलने को आतुर है, और खुशियाँ लुटाने के लिए हमारे दर पर खड़ा है। तो इस शिवजयंती पर उन खुशियों को बटोर लो, कहीं झोली खाली न रह जाये। हम तो इन खुशियों का अनुभव कर रहे हैं, आप भी करके देखें..!!!

शुभकामना संदेश

सबको सुख चैन आराम देने वाले दिलाराम, जो हमारी भावनाओं को समझते हैं, हमपर पूरे बलिहार जाते हैं, अब वे इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं। हम सभी अभी इसका पूरा-पूरा सुख ले रहे हैं। लेकिन हमारी ये दिल से आशा है कि हमारे भाई बहनें भी उस दिलाराम से सम्बंध जोड़कर इलाही सुख लें। भारत देश पुन: देव भूमि व धन धान्य से सम्पन्न बने जहाँ सुख शांति का अखुट भंडार होगा। वो सुनहरी घड़ियाँ हमारे सामने हैं, क्योंकि परमात्मा शिव के आगमन से नई दुनिया का आगमन निश्चित है। परमात्मा शिव की हम बच्चों प्रति यही शुभ आशाएं हैं कि जो कुछ मिला उसे जन जन को बांटो, कोई वंचित न रह जाये। इस महाशिवरात्रि के अवसर पर चारो ओर शिव संदेश फैलाओ ताकि पूरे विश्व के कोने कोने से एक ही आवाज़ आये कि हमारा परमात्मा इस धरा पर आ चुका है। इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ आपको शिव जयंती की हार्दिक शुभकामनाएँ। - ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी।

परमसत्ता से जुड़ाव शक्ति का आधार

हर असंभव कार्य संभव होगा, लेकिन उसके लिए ज्ञान और अनुभव बढ़ाने की आवश्यकता है।

परमात्मा की सत्य पहचान और अपनी सत्य पहचान कर उससे सम्बन्ध जोड़ने की आवश्यकता है। इसके लिए अपनी इंद्रियों पर संयम भी ज़रूरी है। स्वयं को हर पल जागृत रख, उस परम सत्ता से योग रखने से हम स्वयं को बदल पायेंगे और उसका प्रभाव पूरे विश्व पर स्वत: ही पड़ेगा। सभी स्वयं को जागृत कर उस परमात्मा से सम्बन्ध जोड़कर अपने को सशक्त बनायें और निरोगी बन जायें। यही सभी के प्रति मेरी दिल से शुभकामना है। - प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी।

जानें 'सदा शिव' परमात्मा के स्वरूप को

सत्य तो सत्य है, जो एक लाइन का होता है। जैसे आप हैं, ये सत्य है। लेकिन आप नहीं हैं, ये भी एक सत्य है। वो उस समय के हिसाब से है। इस दुनिया में सबकुछ एक ऊर्जा है। और ऊर्जा ना तो उत्पन्न की जा सकती है और ना ही नष्ट की जा सकती है। उसका परिवर्तन होता है। वैसे ही हम सभी एक चैतन्य शक्ति आत्मा, अविनाशी ऊर्जा हैं, ये सत्य है। उसी प्रकार से इस अविनाशी ऊर्जा को ऊर्जान्वित करने का स्रोत परम शक्ति, परम सत्ता परमात्मा है, जिनका नाम 'शिव' है। हमारी ऊर्जा प्रकृति के वश में आने से या वशीभूत होने से नष्ट होती जाती है, जो कि स्वाभाविक है, लेकिन परमात्मा एक ऐसी ऊर्जा है जो प्रकृति के पाँचों तत्वों से परे है, जो कभी नष्ट नहीं होती। उसकी ऊर्जा हमेशा संग्रहित रहती है। इसी को अनेक धर्मों में अलग-अलग नामों से लोगों ने जाना, पहचाना, लेकिन उसे कोई स्वरूप नहीं दिया। क्योंकि निराकार को कोई स्वरूप देना, उसके रूप के साथ न्याय नहीं होगा। वो एक ज्योति बिन्दु ऊर्जा के रूप में है। इसीलिए शायद सभी धर्म पिताओं एवं अन्य समाज सुधारकों ने मूर्ति पूजा का पुरजोर विरोध किया, क्योंकि परमात्मा ज्योति बिन्दु स्वरूप ही हैं।

क्या हम भी मिल सकते हैं उनसे?

यह चमत्कारिक रहस्य परमात्मा शिव के बारे में है, जो अकल्पनीय हैं, अद्भुत हैं। वो इस धरा पर अवतरित होकर स्वयं अपना ज्ञान अर्थात् अपने बारे में सभी को बताते हैं, और इतने सरल शब्दों में व सहजता से बताते हैं कि किसी को भी समझ में आ जाए कि क्या करना है, क्या नहीं करना है। कारण ये है कि सबसे पहले परमात्मा हमको अपनी समझ देते हैं कि मैं तुम सभी आत्माओं का पिता हूँ, और पिता कभी भी अपने बच्चों को किसी भी बात के लिए उदास व हताश नहीं देख सकता। वे आकर कहते हैं, तुम अपनी सारी शक्तियों को भूल चुके हो, इसलिए तुमको मैं तुम्हारी शक्तियों की याद दिलाने के लिए आता हूँ। इसका मिसाल रामचरित मानस में है, कि हनुमान की शक्तियाँ कहीं खो गई थी, तो जब उन्हें समुद्र के पार जाकर सीता का पता लगाना था, उस समय जामवंत ने कहा कि क्यों चुप बैठे हो हनुमान, अर्थात् उसे उसकी शक्तियाँ याद दिलाई। ये हमारा ही यादगार है और हमारा मिसाल है कि हमें ही अपनी शक्तियों को जानना समझना है व अपने निजी स्वरूप में स्थित होना है। जिसके आधार से परमात्मा से मिलन सम्भव है।

परमात्मा ही गीता ज्ञान के दाता

गीता शब्द गीत से बना है, चूंकि गीत बहुत ही मधुर और मनमोहक होता है, जिसे सभी लोग सुनकर आनंद विभोर हो जाते हैं। उसी प्रकार परमात्मा अपने साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा जो ज्ञान देते हैं, वो भी एक गीत की तरह है, जिसे बहुत ध्यान से सुनकर उस पर अमल कर उसका आनंद ले मनमोहक 'कृष्ण' पैदा होता है। परमात्मा शिव सच्चा गीता ज्ञान दाता है, जिस गीता को सुनकर ही मनमोहन की तरह बना जा सकता है।

श्रीमद्भगवद् गीता के लिए संसार में लोग कहते हैं कि इसे सुनकर मोक्ष व स्वर्ग की प्राप्ति होती है और जीवन के अंतिम क्षणों में गीता ज़रूर सुननी चाहिए, ये एक मान्यता है। ये विचारणीय है कि बहुतों ने इस जीवन के दौरान और अंतिम क्षणों में गीता सुनी व पढ़ी है लेकिन क्या उन्हें मोक्ष या स्वर्ग मिला होगा? आज उसी मोक्ष व स्वर्ग को दिलाने के लिए परमात्मा स्वयं इस धरा पर अवतरित हो सहज गीता ज्ञान से स्वर्णिम संसार लाने का अद्भुत कार्य कर रहे हैं। वैसे भी गीता में वर्णित है कि मुझ परमात्मा को समझने व जानने के लिए दिव्य चक्षु अर्थात् दिव्य ज्ञान चाहिए। उसके बिना मैं जाना नहीं जा सकता। भगवान शिव के इस ज्ञान को ही गीता कहा जाना चाहिए, ऐसा हमारा मानना है। जिसे सभी समझकर उस राह पर चल अपने जीवन में अपनाकर देवत्व ला सकते हैं। गीता-ज्ञान उस ज्ञान के सागर, पतित पावन, सर्व आत्माओं के परमपिता, मानव को देवता बनाने वाले, एक मात्र भगवान 'शिव' ने दिया था, जो कि श्रीकृष्ण के भी परमपिता हैं। श्रीकृष्ण ने तो उन परम सद्गुरू शिव से ही वह श्री नारायण पद प्राप्त किया था। इसलिए वृन्दावन में गोपेश्वर का मंदिर है, जिसमें दिखाया गया है कि भगवान शिव श्रीकृष्ण के भी पूज्य हैं और गोप-गोपियों के भी मान्य ईश्वर हैं।

जी हाँ, हमने की है परमात्मा के स्वरूप की अनुभूति

पूरी तरह से तो कोई घटना सत्य नहीं मानी जाती। लेकिन जब कोई अपना अनुभव सुनाता है, तो उसमें वो बातें सामने आती हैं जो मानने योग्य होती हैं। उन्हीं माननीयों में कुछ महान आत्मायें शामिल हैं जिन्होंने अपने अनुभवों में परमात्म स्वरूप की अनुभूति को संजोया है। ऐसी ही कुछ अनुभूतियाँ उन्हीं के शब्दों में हम आपके सामने रख रहे हैं...।

इस ज्ञान से ही सुंदर भविष्य संभव

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की पढ़ाई का पहला उद्देश्य है कि व्यक्ति पहले स्वयं को जाने कि मैं कौन हूँ, मेरा कर्त्तव्य क्या है, मेरे माता-पिता कौन हैं, अपना असली देश क्या है, अपनी संस्कृति क्या है। मेरा मानना है कि आज जिस प्रकार शिक्षा पद्धति पश्चिमी होती जा रही है, तो अगर उसको फिर अपनी संस्कृति की ओर लाना है तो इसके लिए ऐसे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का होना आवश्यक है। आज समाज की सबसे बड़ी ज़रूरत शांति है जो कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ही समाज को प्राप्त हो सकती है। उन्हीं के ज्ञान से सुंदर भविष्य आयेगा और समाज तथा राष्ट्र को उत्कृष्ट करेगा। - **शास्त्री जीवनदास, मैनेजिंग ट्रस्टी, श्री स्वामीनारायण गुरुकुल।**

बाबा से मुलाकात जीवन के सबसे सुखदाई पल

जो पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर शिव बाबा हैं, उनसे ध्यान लगाकर, मार्गदर्शन लेने का जहाँ एकत्रिकरण हो, जहाँ सभी लोग एक साथ बैठकर उनकी अनुभूति करें, वह है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। जो विद्या साक्षात् ईश्वर की प्राप्ति करा दे, यह वही ज्ञान है। अगर विश्व में सुंदरतम से सुंदरतम कोई नगर है, तो वह है माउण्ट आबू में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम। ईश्वर की प्राप्ति केवल यहीं हो सकती है। साकार बाबा से मेरी तीन मुलाकातें हुईं और वे मेरे जीवन के सबसे सुखदाई पल थे।

- **डॉ. स्वामी केशवानंद सरस्वती, काशी।**

बाबा के सानिध्य में छोटे बच्चे जैसा अनुभव हुआ

समस्त विश्व में ऐसी व्यवस्था नहीं है जैसी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में है। यह अनुभव करने की बात है, बयाँ करने की बात नहीं है। मैं जब माउण्ट आबू में परमात्म मिलन के अवसर पर पहुँचा तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे एक छोटे बच्चे को अपने घर में माँ-बाप की गोद मिल गई हो। ऐसा लगा मानो वो मुझे सहला रहे हैं। यहाँ के पवित्र वातावरण और व्यवस्था जैसी पारदर्शिता संसार में और कहीं नहीं। - **महामण्डलेश्वर दर्शन सिंह त्यागमूर्ति, अध्यक्ष, षड्दर्शन साधु समाज एवं धर्म स्थान सुरक्षा ट्रस्ट, हरिद्वार।**

अल्लाह, खुदा का रुप निराकार ज्योति स्वरुप

अल्लाह, खुदा, गॉड व भगवान वास्तव में एक ही है। वह निराकार ज्योति है। पवित्र कुरान में एक लाख पैगम्बरों का वर्णन है, जिन्होंने समय-समय पर इस धरा पर अवतरित होकर मानव जाति को यह शिक्षा दी है कि परमात्मा एक है और वह ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है। ब्रह्माकुमारीज़ बहुत ही सरल ढ़ंग से पूरे विश्व को यह शिक्षा दे रही है कि कैसे परमात्मा से अपना सीधा सम्बन्ध जोड़ें तथा उसकी इबादत करें। जिससे मन को शांति व सुकून की अनुभूति हो।

- **शाहबाज़ खान, प्रसिद्ध फिल्म कलाकार, मुम्बई।**

शिव को करके अर्पण, बनायें जीवन दर्पण

वर्तमान समय कलियुग का अंतिम चरण है। और ये सारा समय कालरात्रि अथवा महारात्रि ही है, जिस समय संसार को पावन और सुखी बनाने के लिए आत्माओं का आह्वान कर रहे हैं और प्रजापिता ब्रह्मा के तन द्वारा अत: उनकी आज्ञानुसार पवित्रता और शुद्धता का पालन कर हमें भी शिव पर अर्पण होकर संसार की सेवा करनी चाहिए। वास्तव में यही एक सच्चा पाशुपत व्रत है, जिसका फल मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति है। अब मनुष्य को चाहिए कि वो अपना नाता विकारों से तोड़कर परमात्मा शिव से जोड़े। शिवरात्रि एक दिन की नहीं है, बल्कि जब तक शिव परमात्मा इस अज्ञान रात्रि में अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं, ये सारा समय ही शिवरात्रि है। जिसमें कि मनुष्य आत्मा को ज्ञान द्वारा ही जागरण मनाना चाहिए। यही रीति शिवरात्रि का त्योहार मनाने की सच्ची रीति है।

समस्त संसार के नर-नारी अंधकार में डूबे हुए हैं। अब परमात्मा शिव अवतरित होकर ज्ञानामृत पिलाकर सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं।

शिव परमात्मा की वर्तमान में अति आवश्यकता

आज मानव इतिहास एक ऐसे महत्वपूर्ण मोड़ पर आ पहुँचा है जहाँ एक ओर उत्थान की अनंत सीमाएँ व सम्भावनाएँ हैं, वहीं दूसरी ओर समूल विनाश की पूर्ण तैयारी है। विज्ञान और तकनीकि की प्रगति दूषित मस्तिष्क वाले मानव के हाथ का खिलौना है। उसने मानव को ऐसे बारूद के ढ़ेर पर लाकर खड़ा कर दिया है कि किसी भी समय विस्फोट हो सकता है। मानव अपने मूल स्वभाव, शांति, प्रेम, आनंद से अपना सम्बन्ध तोड़ चुका है, और भौतिक साधनों के चंगुल में फँसकर मानसिक तनाव बढ़ाता जा रहा है। आत्महत्या, हृदयाघात से मृत्यु, दिनों दिन प्रदूषण की मात्रा बढ़ना, यहाँ तक कि अनिद्रा के कारण लोग गोलियाँ खाकर सो रहे हैं। इसका कारण है, मानव मन का प्रदूषण इतना बढ़ गया है कि वो बंद नहीं हो रहा है। तनाव हर क्षेत्र में इतना अति में है कि उसका कोई पारावार नहीं है। अनुशासन का हर जगह अभाव है। अब आप बताओ, उपरोक्त बातों से आपको क्या लगता है, क्या ये परमात्मा के आने का अनुकूल समय नहीं है जहाँ हर जगह हताशा और निराशा है, अकल्याण है! यही अवसर है अपने आपको उस परम शक्ति से जोड़कर सुख शांतिमय स्थिति प्राप्त करने का। समय बहुत थोड़ा है, इसलिए हे मानव जागो और उस कल्याणकारी शिव से नाता जोड़ो।

इस तरह होता परमात्मा शिव का अवतरण

ये विषय बड़ा ही गम्भीर है, लेकिन जानने योग्य है कि शिव को अजन्मा भी कहते हैं और मृत्युंजय भी कहते हैं। जिनका जन्म भी नहीं होता और जिन्होंने मृत्यु को जीत लिया है। वे सदा मुक्त हैं, कर्मातीत हैं, इसलिए वे किसी के वश में नहीं। लेकिन फिर भी वे सबको मुक्त करने के लिए मुक्तिदाता बनकर आते हैं।

शिव पुराण में एक कथन है कि संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव, ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट होते हैं और उनको रूद्र (कोटि रूद्र संहिता-शिव पुराण) नाम दिया जाता है तथा वे ब्रह्मा मुख से सृष्टि की रचना करते हैं। ये वाक्य शिव पुराण में कई बार उल्लिखित है कि परमात्मा शिव ब्रह्मा के द्वारा अवतरित होकर सतयुगी सृष्टि को रचते हैं। यदि शिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य को पूर्ण रूपेण समझा जाए, तो विश्व परिवर्तन अति सहज हो सकता है। क्योंकि

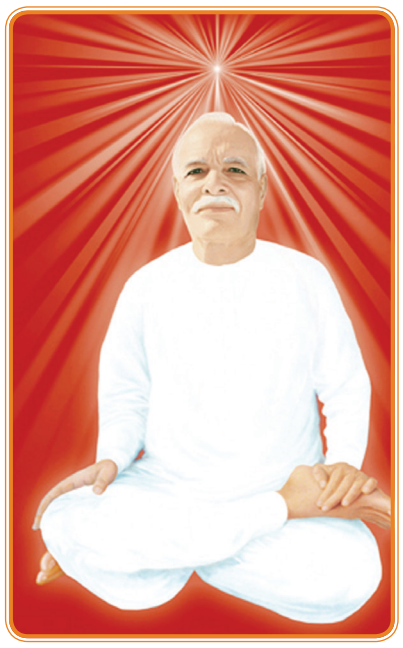

ये सिर्फ शैव सम्प्रदाय के भक्तों का पर्व नहीं, बल्कि पूरे विश्व के धर्म का एक पर्व है। कुछ उदाहरणों के द्वारा हम इसको देख सकते हैं, जैसे महाभारत में उल्लिखित एक वाक्य 'सबसे पहले जब सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी, तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वही नये युग की स्थापना के निमित्त बनी। उसने कुछ शब्द उच्चारे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया।'

इसी प्रकार मनुस्मृति में भी लिखा है कि 'सृष्टि के आरंभ में अण्ड प्रकट हुआ, जो ह. जारों सूर्यों के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था।' इसी प्रकार यहूदी, ईसाई व मुसलमानों के धर्म पुस्तक 'तोरेत' में भी इसी तरह सृष्टि का आरंभ माना जाता है कि ईश्वर की आत्मा पानी पर डोलती थी और आदि काल में परमात्मा ने आदम और हव्वा को बनाया, जिसके द्वारा स्वर्ग रचा।

इन अध्यात्म प्रेमियों का जीवन कुछ नया करने हेतु

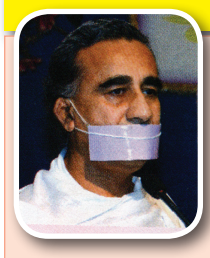

ब्रह्माकुमारी संस्था के संदेश को पूरे विश्व में जाना चाहिए। यहाँ से जो धारा बहेगी, जो तरंगें जाएंगी, ज़रूर जन-जन को आप्लावित करेंगी, शांति प्रदान करेंगी तथा आनंद से सराबोर करेंगी। यहाँ अलौकिकता है, आत्म-भाव है, मैत्री भाव है। ना तो कोई सूक्ष्म हिंसा ना स्थूल। यहाँ भेद नज़र नहीं आता, सब अभेद है। जिनके अंदर समर्पण भाव होगा, वही ब्रह्माकुमारी संस्था में आ सकते हैं। यही मेरा अनुभव है कि मुझे लगता है कि ब्रह्माण्ड में कुछ विशेष घटित होना है, बस थोड़ा समय बाकी रहा हुआ है कि जब इन अध्यात्म प्रेमियों का जीवन बनेगा प्रेरणा, श्रेष्ठ समाज के निर्माण के लिए। जैसे गोवर्धन पर्वत उठाने के लिए सबने अपनी अंगुली दी, वह अंगुली है इस अभियान में एक संकल्प में बंधने की।

-जैन मुनि अरविन्द कुमार,राजपुरा,पटियाला।

जी हाँ, हमने की है परमात्मा के स्वरुप की अनुभूति

मानवता व दिव्यता का प्रत्यक्ष रुप

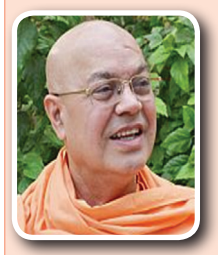

जिस प्रकार की यहाँ पवित्रता, प्रेम, मानवता तथा दिव्यता है, ऐसी हर घर में हो। मैं दादीजी सहित अनेक ब्रह्माकुमार भाई-बहनों से मिला, उनमें एक अनोखी अलौकिकता का अनुभव हुआ। शास्त्रों में जिन विकार रहित योगियों का वर्णन है वह इन सभी आत्माओं द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा है। मैं चाहूंगा कि हर घर में इनके जैसा ही स्वरूप हो, हर घर में ब्रह्माकुमारियों का ओजस हो। **-श्री स्वामी अध्यात्मानंद जी महाराज,अध्यक्ष, शिवानंद आश्रम, अहमदाबाद।**

अभी ही...परमात्म ज्ञान की आवश्यकता

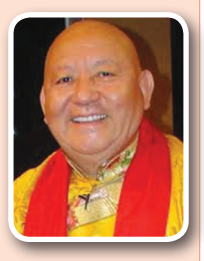

कलियुग को अज्ञान अंधकार का समय बताया गया है। जहाँ अंधकार है, वहीं तो सूर्य की रोशनी की हम कामना करते हैं। ऐसे समय पर वास्तव में ज्ञान सूर्य परमात्मा के दिव्य अवतरण की आवश्यकता पड़ती है। आज चारो ओर अज्ञान अंधकार के मध्य मानव का जीवन व्यतीत हो रहा है। लेकिन हमने इस संस्थान में देखा कि परमात्मा के ज्ञान द्वारा यहाँ मनुष्य स्वयं को रोशन कर रहा है। मुझे ये महसूस हो रहा है कि वास्तव में सिवाय परमात्मा के ये रोशनी कोई दे न सके। **-अंतर्राष्ट्रीय धर्मगुरू आचार्य तानपाई,नेपाल।**

ब्रह्माकुमारी संस्था करती सुसंस्कृत इंसान का निर्माण

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से आप सब लोग जो सेवा कर रहे हैं उस सेवा की कोई कीमत नहीं हो सकती है। ऐसी सेवा को मैं नमन करता हूँ। इतना बड़ा त्याग करना आसान नहीं है। यह तो परमात्मा शिव की कृपा हमारे ऊपर हुई जो हम उनके सानिध्य में आ गये वरना ये सबके भाग्य में नहीं है। उसके लिए प्रालब्ध होना चाहिए, हमारा पुण्य कर्म संचित है, तभी हमें परमात्मा शिव बाबा के पास आने का सौभाग्य मिलता है। ब्रह्माकुमारीज़ के विद्यालय तो बहुत हैं, देश में हैं, विदेश में हैं, कम विद्यालय नहीं हैं। उन सब विद्यालयों का एक ही उद्देश्य है सुसंस्कृत इंसान का निर्माण। हमने बहुत से लोगों का निर्माण किया है, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील बनाये, लेकिन जिस संस्कार की आवश्यकता थी वो हम नहीं दे पाये, लेकिन ये विद्यालय हर व्यक्ति चाहे वो कोई भी हो, उसे बिना अपेक्षाओं के सुसंस्कृत बनाने का कार्य कर रहा है।

- अन्ना हज़ारे,प्रसिद्ध समाजसेवी।

सभी ने परमात्मा को ज्योति बिन्दु रूप में ही किया याद

चारो दिशाओं में सभी ने जाने-अनजाने शिव ज्योति बिन्दु को ही परमात्मा पिता के रूप में स्वीकार किया है। भले वो मान्यतायें इतनी ज़्यादा प्रभावी नहीं हैं, फिर भी लोग उन मान्यताओं पर चलने की कोशिश करते हैं।

सबसे पहले इसकी शुरुआत हम मुस्लिम धर्म से करते हैं। उनकी ये मान्यता है कि मक्का में रखे हुए पवित्र पत्थर का दर्शन जीवन में एक बार अवश्य करना चाहिए। उस पत्थर को 'ओवल शेप' में रखा गया है। उसे 'संगे असवद' कहते हैं और 'अल्लाह' भी कहते हैं। उसे कई 'नूर ए इलाही' भी कहते हैं। नूर मतलब प्रकाश। इसलिए हर मुसलमान जब भी नमाज़ पढ़ता है, तो मक्का की दिशा में ही मुख करके पढ़ता है।

जीसस ने भी कहा, 'गॉड इज़ लाइट, आई एम द सन ऑफ गॉड।' उन्होंने कभी नहीं कहा कि 'आई एम गॉड।' वहीं पर 'ओल्ड टेस्टामेंट' में दिखाया है कि हज़रत मूसा जब माउण्टेन पर गये तो उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ, जिसको उन्होंने नाम दिया 'जेहोवा'। इसलिए चर्च में आप जायेंगे तो वहाँ मोमबत्तियाँ जलती हुई मिलेंगी, जो परमात्मा के निराकार स्वरूप का प्रतीक है। वहीं सिक्ख धर्म में भी गुरुनानक जी ने 'एक ओंकार सतनाम, कर्ता पूरख...', ये सब महिमा गुरबाणी में लिखी है। उन्होंने भी परमात्मा को निराकार स्वरूप में देखा।

पारसियों में भी 'अग्यारी' में जायेंगे तब वहाँ पर 'होली फायर' मिलता है। कहा जाता है कि जब पारसी ईरान से भारत आये तो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा ले आये, जिसको कहते हैं अखण्ड ज्योत। जिसे उन्होंने परमात्मा का दिव्य स्वरूप कहा। वहीं भारत में परमात्मा के प्रतीकात्मक रूप में पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण हर स्थान पर शिवलिंग की स्थापना है। जिन शिवलिंगों के नाम या तो नाथ के साथ जुड़े हैं, या तो ईश्वर के साथ जुड़े हैं। जैसे बबूल नाथ, भोलेनाथ, सोमनाथ। ईश्वर में रामेश्वर, गोपेश्वर, पापकटेश्वर आदि। इस प्रकार ये सब भी परमात्मा के ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप होने का प्रमाण देते हैं। अन्य देशों में शिवलिंग के या परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु के नाम जैसे बेबिलोन में 'शिऊन', मिश्र में 'सेव', फिज़ी में 'सेवाजिया', रोम में 'प्रियपस' आदि स्थानों पर भी शिवलिंग की पूजा इन नामों के आधार से की जाती है। इस प्रकार सभी धर्मपिताओं तथा धर्म ग्रन्थों ने भी स्पष्ट रूप से ये दर्शाया है कि परमात्मा शिव ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप ही हैं, और वे हम सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा हैं और उन्होंने ही इस सृष्टि की रचना की है।

कैसे पहचानें अपने प्यारे परमपिता को

भगवान के बारे में आज यथार्थ परिचय किसी के पास भी नहीं है। कोई भगवान को कण-कण में कहता, कोई कहता प्रकृति ही भगवान है, कोई कहता हम सभी भगवान हैं। इतनी ज़्यादा भ्रम की स्थिति क्यों है? जिसको भी हमने देखा, उसी को भगवान कह दिया। क्या ये सत्य है? जैसे जौहरी के पास एक कसौटी होती है जिसपर कसकर वो सोने को परखता है, ठीक वैसे ही हम भी कुछ मान्यताओं की कसौटी पर भगवान को कसकर देखें कि कल अगर भगवान हमारे सामने आ जाये तो हम उसे पहचान सकें, ताकि बाद में पछताना ना पड़े। आज हम आपको भगवान को परखने की कसौटी दे रहे हैं। **वो कसौटी पाँच मुख्य बातों पर आधारित है।**

पहला, भगवान वो हो सकता है जो सर्व धर्म मान्य हो। जिसको सभी धर्म वाले परमात्मा स्वीकार करें, उसको हम सत्य कहेंगे। जैसे एक व्यक्ति को कोई भाई कहता, कोई मामा कहता, कोई पिता कहता, लेकिन स्वरूप तो वही रहता है, स्वरूप तो नहीं बदल जाता ना। उसी प्रकार चाहे ईश्वर कहो, अल्लाह कहो, खुदा कहो, लेकिन उसका स्वरूप नहीं बदलेगा, सत्य यही है। **दूसरी कसौटी है,** परमात्मा

वो है जो सर्वोच्च हो। जिसके ऊपर कोई ना हो। उसका ना कोई माता पिता हो, ना बन्धू हो, ना सखा हो, ना शिक्षक। उसे कहेंगे परमात्मा।

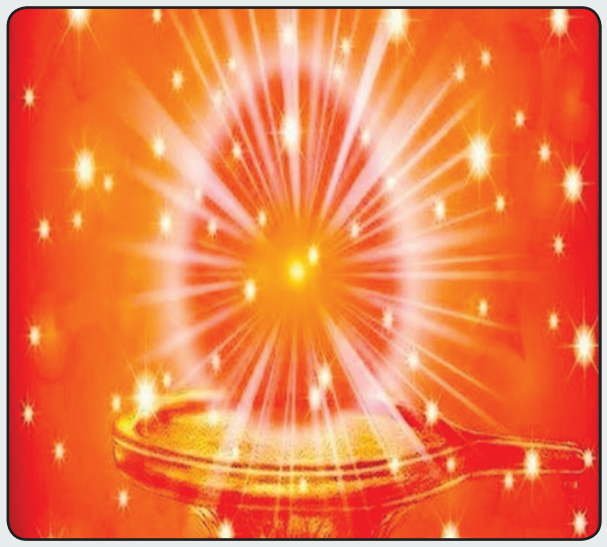

तीसरा, परमात्मा उसे कहा जायेगा जो सर्वोपरी हो। अर्थात् जिसका जन्म-मरण के चक्र से कोई नाता ना हो। परमात्मा को अजन्मा कहते हैं। अजन्मा के साथ साथ ये भी कहा जाता है कि उसे काल कभी नहीं खा सकता।

चौथा, परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्वज्ञ हो। जिसको तीनों कालों और तीनों लोकों का ज्ञान हो, जो त्रिकालदर्शी हो।

पाँचवा, परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्व गुणों में अनंत हो। जिसकी महिमा के लिए कहते कि धरती को कागज़ बनाओ, समुंदर को स्याही बनाओ और जंगल को कलम बनाओ तब भी उसकी महिमा लिखी न जा सके। तो ये हैं परमात्मा को परखने की वास्तविक पाँच कसौटी। जिस कसौटी पर हमें अपनी मान्यताओं को कसकर देखना है कि क्या वो सत्य है। जल्दी ही अपने सत्य पिता को पहचान लो। कहीं उसे पहचानने में देर न हो जाये।

शंकर, राम और कृष्ण के भी आराध्य 'शिव'

आज तक हमने परमात्मा शिव और शंकर को एक ही रूप में देखा, जाना, पूजा और याद किया। लेकिन यदि हम इनके बीच अंतर पर गौर करें तो हम पायेंगे कि शंकर सदा शिव की याद और आराधना में मग्न हैं। शंकर देवता हैं जबकि शिव परमपिता परमात्मा।

श्रीराम ने भी ज्योतिर्लिंगम शिव की पूजा की और उनसे शक्तियाँ प्राप्त कर रावण पर विजय प्राप्त की। वो ज्योतिर्लिंग रामेश्वरम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। रामेश्वरम अर्थात् राम के ईश्वर। इससे सिद्ध होता है कि शिव राम से भी ऊपर हैं।

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने थाणेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता सर्वशक्तिवान की आराधना की और शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई।

क्या आप भी खुशियों की तलाश में हैं? कहीं आप अपने मन की परेशानियों से जूझ तो नहीं रहे? कहीं आप अपने परिवार और सम्बन्धों से टकराव के दौर से तो नहीं गुज़र रहे? तो देखिये आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' चैनल।

'Peace of Mind' channel
TATA Sky 1065 airtel digital TV 678
Videocon d2h 497 Reliance Digital TV 640
FASTWAY GTPL DEN hathway UCN DigiCable SITI

Free to Air
ABS FREE DTH
KU Band with MPEG (DVB-S/S2) Receiver
LNB Freq. - 10600/10600
Tans Freq. - 11911
Polarization - Horizontal
Symbol - 44000
22k - On
Satellite - ABS-2; 75° E

Contact
Brahma Kumaris, 2nd Flr Anand Bhavan, Shantivan, Sirohi, Abu Rd, Raj-307510
+91 9414151111
+91 8104777111
info@pmtv.in
www.pmtv.in

स्थानीय सेवाकेन्द्र का पता:-

कथा सरिता

तू भी अपनी कीमत जान

माइकल जब 13 साल का हुआ तो उसके पिता ने उसे एक पुराना कपड़ा देकर उसकी कीमत पूछी। माइकल बोला एक डॉलर, तो पिता ने कहा कि इसे बेचकर दो डॉलर लेकर आओ। माइकल ने उस कपड़े को अच्छे से साफ़ कर धोया और अच्छे से उस कपड़े को फोल्ड लगाकर रख दिया। अगले दिन उसे लेकर वह रेलवे स्टेशन गया, जहां कई घंटों की मेहनत के बाद वह कपड़ा दो डॉलर में बिका। कुछ दिन बाद उसके पिता ने उसे वैसा ही दूसरा कपड़ा दिया और उसे बीस डॉलर में बेचने को कहा। इस बार माइकल ने अपने एक पेंटर दोस्त की मदद से उस कपड़े पर सुन्दर चित्र बना कर रंगवा दिया और एक गुलज़ार बाजार में बेचने के लिए पहुंच गया। एक व्यक्ति ने वह कपड़ा बीस डॉलर में खरीदा और उसे पाँच डॉलर की टिप भी दी। जब माइकल वापस आया तो उसके पिता ने फिर एक कपड़ा हाथ में दे दिया और उसे दो सौ डॉलर में बेचने को कहा। इस बार माइकल को पता था कि इस कपड़े की इतनी ज़्यादा कीमत नहीं मिल सकती। उसके शहर में मूवी की शूटिंग के लिए एक नामी कलाकार आई थीं। माइकल उस कलाकार के पास पहुंचा और उसी कपड़े पर उनके ऑटोग्राफ ले लिए। ऑटोग्राफ लेने के बाद माइकल उसी कपड़े की बोली लगाने लगा। बोली दो सौ डॉलर से शुरू हुई और एक व्यापारी ने वह कपड़ा 1200 डॉलर में ले लिया। रकम लेकर जब माइकल घर पहुंचा तो खुशी से पिता की आँखों में आंसू आ गए। उन्होंने बेटे से पूछा कि इतने दिनों से कपड़े बेचते हुए तुमने क्या सीखा? माइकल बोला - पहले खुद को समझो, खुद को पहचानो। फिर पूरी लगन से मन्ज़िल की ओर बढ़ो, क्योंकि जहाँ चाह होती है, राह अपने आप निकल आती है। पिता बोले कि तुम बिल्कुल सही हो, मगर मेरा ध्येय तुम्हें यह समझाना भी था कि अगर इंसान खुद के बने कपड़े को मैला होने के बाद भी इतनी कीमत बढ़ा सकता है, तो फिर वो परमात्मा अपने द्वारा बनाये हम इंसानों की कीमत बढ़ाने में क्या कोई कसर छोड़ भी सकता है? जीवात्मा भी यहां आकर मैली हो जाती है, लेकिन सतगुरू हम मैले जीवात्माओं को पहले साफ़ और स्वच्छ करते हैं, जिससे परमात्मा की नज़र में हम जीवात्माओं की कीमत थोड़ी बढ़ जाती है। फिर सतगुरू हम जीवात्माओं को अपनी रहनी के रंग में रंग देते हैं, फिर कीमत और ज़्यादा बढ़ जाती है। फिर सतगुरू हम पर अपने नाम की मोहर लगा देते हैं, फिर तो इंसान अपनी कीमत का अंदाज़ा ही नहीं लगा सकता।

लेकिन अफ़सोस! इतना कीमती इंसान अपने आप को कौड़ियों के दाम खर्च करते जा रहा है। उसे अपने आप की ही पहचान नहीं, उसे अपने ऊपर लगी सतगुरू के नाम रूपी कृपा और उस अपार दया की कद्र नहीं, क्योंकि अगर कद्र होती तो उसकी याद में अपना पूरा पूरा समय देकर अपने इंसानी जामे का मकसद और उसकी कीमत भी ज़रूर समझते।

निष्फल कुछ भी नहीं...

एक गाँव में एक किसान रहता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी और एक लड़का था। कुछ सालों के बाद पत्नी की मृत्यु हो गई। उस समय लड़के की उम्र दस साल थी। किसान ने दूसरी शादी कर ली। उस दूसरी पत्नी से भी किसान को एक पुत्र प्राप्त हुआ। किसान की दूसरी पत्नी की भी कुछ समय बाद मृत्यु हो गई।

किसान का बड़ा बेटा जो पहली पत्नी से प्राप्त हुआ था, जब शादी के योग्य हुआ तब किसान ने बड़े बेटे की शादी कर दी। फिर किसान की भी कुछ समय बाद मृत्यु हो गई। किसान के दोनों बेटे साथ ही रहते थे। कुछ समय बाद किसान के छोटे लड़के की तबीयत खराब रहने लगी। बड़े भाई ने कुछ आस पास के वैद्यों से उसका इलाज करवाया, पर कोई राहत ना मिली। छोटे भाई की दिन पर दिन तबीयत बिगड़ी जा रही थी और बहुत खर्च भी हो रहा था। एक दिन बड़े भाई ने अपनी पत्नी से सलाह की, यदि ये छोटा भाई मर जाए तो हमें इसके इलाज के लिए पैसा खर्च नहीं करना पड़ेगा। तब उसकी पत्नी ने कहा कि क्यों न किसी वैद्य से बात करके इसे ज़हर दे दिया जाए, किसी को पता भी नहीं चलेगा, रिश्तेदारी में भी कोई शक नहीं करेगा। सब सोचेंगे कि बीमारी से मृत्यु हो गई। बड़े भाई ने ऐसा ही किया। उसने एक वैद्य को कुछ धन देकर छोटे भाई को ज़हर देने की बात की। वैद्य ने बात मान ली और उसे ज़हर दे दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। उसके भाई भाभी ने खुशी मनाई कि रास्ते का काँटा निकल गया, अब सारी सम्पत्ति अपनी हो गई। उसका अंतिम संस्कार कर दिया। कुछ महीनों बाद किसान के बड़े लड़के की पत्नी को लड़का हुआ! उन पति पत्नी ने खूब खुशी मनाई, बड़े ही लाड़-प्यार से लड़के की परवरिश की। जब लड़का जवान हो गया, तो उसकी शादी कर दी! शादी के कुछ समय बाद अचानक लड़का बीमार रहने लगा। माँ बाप ने उसका बहुत वैद्यों से इलाज करवाया। जिसने जितना पैसा मांगा उसने दिया ताकि लड़का ठीक हो जाए। अपने लड़के के इलाज में उसने अपनी आधी सम्पत्ति तक बेच दी, पर लड़का बीमारी के कारण मरने की कगार पर आ गया। उसका शरीर इतना ज़्यादा कमज़ोर हो गया कि अस्थि पंजर शेष रह गया था। एक दिन उसका पिता चारपाई पर लेटे अपने लड़के की दयनीय हालत देख कर दु:खी होकर उसकी ओर देख रहा था! तभी लड़का पिता से बोला, भाई! अपना सब हिसाब हो गया। बस अब कफन और लकड़ी का हिसाब बाकी है, उसकी तैयारी कर लो। ये सुनकर उसके पिता ने सोचा कि लड़के का दिमाग भी काम नहीं कर रहा बीमारी के कारण। वो बोला, बेटा मैं तेरा बाप हूँ, भाई नहीं। तब लड़का बोला, मैं आपका वही भाई हूँ जिसे आपने ज़हर देकर मरवाया था। जिस सम्पत्ति के लिए आपने ऐसा किया था, अब वो मेरे इलाज के लिए आधी बिक चुकी है। बस आपकी शेष है। हमारा हिसाब हो गया!

तब उसका पिता फूट-फूट कर रोते हुए बोला, कि मेरा तो कुल नाश हो गया। जो किया मेरे आगे आ गया। पर तेरी पत्नी का क्या दोष है जो इस बिचारी को जिन्दा जलाया जायेगा(उस समय सतीप्रथा थी, जिसमें पति के मरने के बाद पत्नी को पति की चिता के साथ जला दिया जाता था)। तब वो लड़का बोला, वो वैद्य कहाँ है जिसने मुझे ज़हर खिलाया था। तब उसके पिता ने कहा कि आपकी मृत्यु के तीन साल बाद ही वो मर गया था। तब लड़के ने कहा, ये वही दुष्ट वैद्य आज मेरी पत्नी के रूप में है। मेरे मरने पर इसे ज़िन्दा जलाया जायेगा।

परमेश्वर कहते हैं कि तुमने उस दरगाह का महल ना देखा,
धर्मराज लेगा तिल तिल का लेखा।
एक लेवा एक देवा दुतम, कोई किसी का पिता ना पुत्रम,
ऋण सम्बंध जुड़ा है ठाडा, अंत समय सब बारह बाटा ।।

शान्तिवन। ब्रह्माकुमारीज़ बहादुरगढ़ ने महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में बेरों से शिवलिंग बनाया। इसे विश्व कीर्तिमान, 'बंडर बुक ऑफ रिकॉर्ड्स इन्टरनेशनल लंडन' में स्थान मिला है। इसका प्रमाण पत्र राजयोगिनी दादी जानकी को भेंट करते हुए ब्र.कु. अंजली, ओमशान्ति मीडिया के संपादक ब्र.कु.गंगाधर, डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके तथा ब्र.कु. संदीप।

भुवनेश्वर-ओडिशा। धर्मेंद्र प्रधान,यूनियन मिनिस्टर,पेट्रोलियम एंड नैचुरल गैस को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.दुर्गेश नंदिनी। साथ हैं ब्र.कु. विजया, ब्र.कु. प्रकाश, ब्र.कु. हिरोज व अन्य।

आहोर-राज.। 'प्रभु दर्शन भवन' के उद्घाटन अवसर पर केक काटते हुए ब्र.कु. शुक्ला दीदी,दिल्ली, ब्र.कु. मीरा, ब्र.कु. गीता, प्रफुल्ल कुंवर, पंकज मीना, सोनीलाल, ब्र.कु. महेश,मुम्बई तथा अन्य।

हरमू रोड-राँची। सेवाकेन्द्र की प्रथम संचालिका ब्र.कु. रानी दीदी की पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ब्र.कु. निर्मला तथा अंजेला गोएनका।

लंदन। थ्री फेथ फोरम द्वारा विभिन्न धार्मिक संस्थाओं के लिए आयोजित कार्यक्रम में 'बीइंग द हैप्पीनेस मैगनेट' प्रोजेक्ट के अंतर्गत ब्र.कु. मौरीन तथा ब्र.कु. दक्षा को सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया।

कटक-ओडिशा। साइंटिस्ट्स व इंजीनियर्स के लिए आयोजित 'नेशनल सेमिनार' का उद्घाटन करते हुए बायें से ब्र.कु. फकीर मोहन दास, डॉ हिमांशु पाठक,डायरेक्टर,एन.आर.आर.आई., प्रो.ई.वी. स्वामीनाथन, ब्र.कु. मोहन सिंघल, ब्र.कु.कमलेश दीदी, ब्र.कु. सुलोचना, डॉ.गोपाल चन्द्र मित्रा,पूर्व सेक्रेट्री,वर्क्स डिपार्टमेंट, ब्र.कु.भारत भूषण, ब्र.कु.नरेन्द्र पटेल, ए.के.पण्डा व अन्य।

शक्ति तो उन्हीं से मिलेगी

जिस प्रकार डेस्कटॉप, लैपटॉप, मोबाइल, आदि डिस्चार्ज होने पर उसे हम चार्जर से कनेक्ट करते हैं, जिसके बाद फिर से वो अपनी सुचारु अवस्था में आता है। उसी प्रकार से जब हम पूरी तरह से अपने विकारों में लिप्त होते तो हम डिस्चार्ज होते, लेकिन खुद को चार्ज करने के लिए हमारे पास कोई सोर्स नहीं है। हमारा ये मानना है कि सोर्स तो है लेकिन उस सोर्स का हमें पता नहीं है। अगर हम सोर्स को जान जायें और उससे कनेक्ट हो जायें तो हम भी चार्ज हो सकते हैं।

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

इस घटनाक्रम को ऐसे समझते हैं कि जब हम सभी ऊर्जायें एक साथ इस धरती पर आती हैं और अपना बहुत अच्छा खेल करती हैं अर्थात् सब आत्मायें अपना-अपना रोल प्ले करती हैं तो कुछ समय के बाद आत्माओं की ऊर्जा में कमी आती जाती है। यह ऊर्जा एक समय में इतनी ज़्यादा घट जाती है कि हमारा कर्म उससे प्रभावित होता जाता है, अर्थात् हम सभी के कर्म में गुस्सा, नाराज़गी, दु:ख, तकलीफ, बढ़ जाती है। इसलिए हमें शक्ति की ज़रूरत तो पड़ेगी ना! इसलिए हमें थोड़ा सा इस बात को समझकर शास्त्रगत रूप से, वैज्ञानिक रूप से, आध्यात्मिक रूप से, उस सोर्स के बारे में जानना चाहिए जिससे हम फिर से ऊर्जान्वित हो जाएं। करना कुछ नहीं है, बस थोड़ा सा प्रयास है जो हम आपसे शेयर करना चाहेंगे। होता क्या है... हम परेशान हैं लेकिन हम अपनी समस्या को किसी के सामने रखने में कतराते हैं, ये होना स्वाभाविक है लेकिन मानना तो पड़ेगा ना कि हमें चाहिए तो सही, शक्ति। हमारी व्यक्तिगत मत है कि इस दुनिया में हमारा कोई भी सम्बन्ध इतना शक्तिशाली नहीं है जो हमें किसी भी तरह से अपने स्वभाव से, अपनी चलन से, अपने बोल से, हमें हील कर सके, बल्कि हम और ही ज़्यादा दु:खी हो जाते हैं क्योंकि वो आत्मायें भी तो कमज़ोर हो चुकी हैं ना! हमें उन्हें समझने से पहले थोड़ा खुद को समझना पड़ेगा। समझ यह है कि हम कौन हैं और क्या हमारा अस्तित्व है इस दुनिया में। हम प्रकृति के वश हैं अर्थात् पंच महाभूत द्वारा शक्तियों का इस्तेमाल करते हैं। अर्थात् देखना, सुनना, सोचना, सब हम प्रकृति के द्वारा ही तो करते हैं, जिससे हमारी ऊर्जा नष्ट होती जाती है और हम सभी अपने आप को शक्तिहीन महसूस करते जाते हैं। इस दुनिया में एक ऐसी भी शक्ति है जो प्रकृति के पाँचों तत्वों से परे और पार है। उस शक्ति को दुनिया में कॉस्मिक एनर्जी या ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कहते हैं। लेकिन इस ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के केन्द्र में एक परम शक्ति है जिसे हम परमात्मा की संज्ञा देते हैं। ब्रह्माण्ड को कुछ नामों से जानते हैं, जैसे परलोक, ब्रह्मलोक भी नाम देते हैं, ये एक तरह से धाम है अर्थात् रहने का पवित्र स्थान जहाँ आत्मायें रहती हैं। उदाहरण के रूप में... जैसे दिल्ली राजधानी है, लेकिन उसमें किसी एक स्थान पर प्रधानमंत्री का निवास स्थान है। वैसे ही परमधाम बहुत बड़ा है, जहाँ हमारे पिता और हम आत्मायें निवास करती हैं। उसे हम अपना वास्तविक घर कहते हैं, जहाँ से आकर हम अपना पार्ट प्रकृति के साथ मिलकर बजाते हैं। वही एक सोर्स है जो हमारी ऊर्जा को मूल स्वरूप में ले आने में सक्षम है। करना क्या है... सबसे पहले प्रकृति को भूल अर्थात् देह को भूलकर उस परम शक्ति से जुड़ाव करना है, ताकि हम फिर से रिचार्ज और फ्रेश हो सकें।

फर्रूखाबाद-उ.प्र.। जिलाधिकारी मोनिका रानी को ईश्वरीय निमंत्रण देने के बाद ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. मंजु।

मन की बात

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: हम सभी धर्म को मानने वाले हैं। परन्तु आज देखा ये जा रहा है कि मनुष्य के कर्म उसके धर्म के अनुकूल नहीं रहे हैं। हम क्या करें जो कर्म धर्म के साथ जुड़ जाएं?

उत्तर: धर्म ने मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म सिखाये। धर्म था ही मनुष्य के कर्म पर अंकुश लगाने के लिए। परन्तु समय बीता, मनुष्य में गिरावट आई व योंकि उसने धर्म का अनुसरण करना बंद कर दिया। परिणामत: धर्म मंदिरों तक सीमित रह गया या ग्रन्थों में सिमट गया। सभी धर्मों का यही हाल हुआ। इस कारण से मनुष्य के पास धर्म का बल नहीं रहा। अब पुन: आवश्यकता है कर्म को धर्म से जोड़ने की। धर्म मनुष्य को पवित्रता सिखाता है व श्रेष्ठ आचरण सिखाता है तो किसी आयु तक उसे संयमित जीवन जीना ही चाहिए। चार विशेष कर्म जीवन में ले आयें तो धर्म के साथ कर्म भी जुड़ जाएगा। सबको सुख देना, ईमानदारी से कार्य व्यवहार करना, मुख से मृदु व नम्रतापूर्ण वचन बोलना तथा लोभ व इच्छाओं का गुलाम न होना। इन श्रेष्ठ कर्मों को जीवन में अपनाने से पुण्य कर्मों का खाता बढ़ता रहेगा और धर्म के बहुत से उपदेश स्वत: ही जीवन में आ जाएंगे। इसके विपरीत यदि मनुष्य अति विषय वासनाओं में रहता है, यदि वह पाप कर्मों में प्रवृत्त रहता है, यदि वह दूसरों का धन हड़पता है और यदि वह दूसरों को सताता है, तो वह धर्म का अनुयायी नहीं है। कर्म, धर्म के साथ जुड़ जाए इसके लिए परमात्मा से योगयुक्त होकर शक्ति लेना भी आवश्यक है।

प्रश्न: बाबा हमेशा कहते हैं, कर्म करते हुए कर्म से न्यारे रहो। क्या यह सम्भव है - यदि हाँ तो कैसे?

उत्तर: मनुष्य का प्रत्येक कर्म उस पर अपना प्रभाव डाल रहा है, यों कहें कि कर्म उसे बांध रहे हैं अर्थात् वह कर्मबंधन में जकड़ता जा रहा है। परन्तु हमारा लक्ष्य है - कर्मातीत होना। कर्मातीत स्थिति का अर्थ है कर्म के प्रभाव से मुक्त रहना व कर्म के परिणाम के प्रभाव से भी मुक्त रहना। परन्तु यदि हम देहभान में रहकर कर्म करते हैं तो हमारे कर्म हमारे लिए बंधन का काम करते हैं, जबकि आत्मिक स्थित में रहकर किये जाने वाले कर्म दिव्य कर्म कहलाते हैं और ऐसे कर्म जीवन को दिव्य बनाने वाले हैं। हम ऐसे ढंग से कर्म करें कि हमें कर्मोपरांत यह लगे कि मानो हमने कुछ भी नहीं किया। यही आत्मा की निर्लिप्त स्थिति है। इसे ही कह दिया है कि आत्मा निर्लेप है। आत्मा निर्लेप नहीं है, बल्कि यह उसकी सम्पूर्ण योगयुक्त स्थिति है। कर्म करने से पूर्व हम जिस स्मृति में होते हैं, उसके वायब्रेशन्स पूरे कर्म को प्रभावित करते हैं। इसलिए हमारे कर्म दिव्य व अलौकिक हों, तो कर्म से पूर्व इस तरह अभ्यास करें। प्रथम- यह संकल्प नैचुरल कर दें कि मेरा हर कर्म परमात्म-अर्थ है। मैं अपने या परिवार के लिए कर्म नहीं कर रहा हूँ। बाबा से बातें करें -बाबा मेरा हर कर्म तुम्हारे लिए है। द्वितीय- कर्म के परिणाम को भी प्रभु अर्पण करें। चाहे परिणाम अच्छा हो या बुरा, महिमा हो या ग्लानि, हार हो या जीत, सब प्रभु अर्पण ....। तृतीय- अभ्यास करें कि मैं आत्मा इन कर्मेन्द्रियों से कर्म करा रही हूँ और बाबा हज़ार भुजाओं सहित मेरे साथ हैं। कभी यह अभ्यास करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ या मैं एक महान आत्मा हूँ। कभी परमात्म स्वरूप पर बुद्धि को स्थिर करके कर्म करें। ऐसा करने से कर्म करते भी न्यारेपन की अनुभूति होती रहेगी।

प्रश्न: हमारे यहाँ एक स्लोगन लिखा रहता है कि स्वयं को बदलो तो जग बदलेगा। इसका क्या अर्थ है और क्या एक व्यक्ति के बदलने से विश्व बदल जायेगा?

उत्तर: देखने में तो ऐसा ही लगता है कि अकेला चना क्या भाड़ फोड़ेगा! एक व्यक्ति अच्छा बन भी जाए तो इससे क्या होता है। परन्तु सत्य कुछ और है। आपको यह जानना चाहिए कि ये महावाक्य किसने किसको कहे! हम बता दें- स्वयं भगवान ने देवकुल की महानात्माओं के लिए ये वचन उच्चारे। वे आत्माएं इष्टदेव, देवी हैं और पूर्वज हैं। उन एक-एक महानात्माओं से लाखों महानात्माएं जुड़ी रहती हैं। उनका परिवर्तन उन लाखों आत्माओं को परिवर्तित कर देता है। वे ही इस कल्पवृक्ष के मास्टर बीज भी हैं। उनका परिवर्तन विश्व की अनेक आत्माओं पर प्रभाव डालता है। इस तरह यह कार्य चलता है। देखिए..एक घर में जो परिवार का बड़ा होता है, उसकी स्थिति का प्रभाव सब पर पड़ता है। यदि वह क्रोधी है, कटुभाषी है तो परिवार पर उसका बुरा प्रभाव देखा जा सकता है। इसी तरह जो सृष्टि के बड़े हैं, पूर्वज हैं, उनका प्रभाव भी पूरी सृष्टि पर पड़ता है।

प्रश्न: हमारे सेवाकेन्द्र के मकान को किसी ने बड़ी ही चालाकी से अपनी पत्नी के नाम करा लिया है। हमें इन बातों का इतना ज्ञान नहीं था, उसने हमारे भोलेपन का फायदा उठाया। हम इसमें क्या योग का प्रयोग करें?

उत्तर: अवश्य ही उस व्यक्ति के मन में पाप आ गया है। संसार में पाप अति बढ़ता जा रहा है। अपने ही अपनों को धोखा दे रहे हैं। अब थोड़े ही समय में ऐसे पापी बड़ा कष्ट पायेंगे और जो भगवान को धोखा देने की सोच रहे हैं वे तो स्वयं के लिए रसातल जाने का मार्ग बना रहे हैं। सम्पत्ति आने वाले समय में मनुष्य को ज़्यादा कष्ट देगी। विनाशकाल में सुखी वही रहेंगे जिन्होंने अपनी सम्पत्ति को पुण्यों में बदल दिया होगा। आप डरें नहीं, आप भोले हैं तो भोलानाथ आपके साथ है। भगवान क्योंकि परम सत्य है, इसलिए उसे केवल सत्य ही स्वीकार्य है। आप सच्चे मन से उन्हें क्षमा कर दें और इक्कीस दिन योग करें, एक घण्टा प्रतिदिन। योग से पहले दो स्मान याद करें - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ व विघ्न विनाशक हूँ। इससे सेवा में आया यह विघ्न नष्ट हो जाएगा।

Contact e-mail
bksurya8@yahoo.com

जीवन एक खेल की तरह जीएं ...

- ब्र.कु. नेहा,मुम्बई

हमने कइयों को ऐसा देखा है कि ज़िम्मेवारियों का बोझ दिमाग में लादे हुए कार्य करते हैं। कई बार तो उनकी मनोस्थिति ऐसी भी हो जाती कि ये कार्य छोड़ दें, क्यों ये बोझ लेकर मैं जी रहा हूँ! आखिर मुझे दो रोटी ही तो पेट के लिए चाहिए। फिर इतना बोझ ढ़ोने का क्या मतलब! परंतु करे भी क्या, परिवार भी तो है ना! तो उसको भी तो सम्भालना है, बच्चों को पढ़ाना है, उनको सेटल करना है, समाज के उत्तरदायित्व निभाने हैं। आखिर मैं भी तो समाज का एक हिस्सा हूँ ना! तो ये सब तो करना ही है। यहाँ से भाग भी जाऊँ तो लोग क्या कहेंगे! तो ऐसे ऐसे चलते ख्यालातों के मध्य एक स्थिति ऐसी आती है, चलो यार, इसको अभी छोड़ ही दें। ऐसे वक्त पर हमें क्या करना चाहिए? इसी का हल और इसमें ज़िम्मेवारियाँ लेते हुए इसमें सफल होने का महामंत्र हम इस कहानी से समझते हैं...

एक राजा अपने राज्य में सुखपूर्वक राज्य करता था। लेकिन धीरे-धीरे देश में समस्याएं बढ़ गईं। जिससे राजा की चिंता भी बढ़ने लगी। उसे न भूख लगती, न ही नींद आती। वह बहुत परेशान रहने लगा।

आखिर एक दिन राजा अपने गुरू के पास गया और बोला: 'गुरूदेव, अब राजकाज में मेरा मन नहीं लगता। राज्य में परेशानियाँ बढ़ गई हैं। इच्छा होती है राजकाज छोड़कर कहीं चला जाऊँ।'

गुरू जी अनुभवी थे, उन्होंने कहा: 'राज्य का भार पुत्र को सौंप दो और आप निश्चिंत रहो।' राजा ने कहा: 'पुत्र अभी छोटा है।' गुरूजी ने कहा: 'तो अपना राज्य मुझे सौंप दो।' राजा खुश हो गया। उसने पूरा राज्य गुरूजी को सौंप दिया और वहां से जाने लगा। गुरूजी ने पूछा: 'कहाँ जा रहे हो? राजा ने उत्तर दिया : 'मैं किसी दूसरे देश में जाकर छोटा-मोटा धंधा करूंगा।' गुरूजी ने पूछा: 'धंधे के लिए पैसे कहां से लाओगे?' राजा ने कहा: 'खज़ाने में से ले जाऊंगा।' गुरूजी ने कहा: 'खज़ाना आपका है क्या? वह तो आपने मुझे सौंप दिया है।' राजा ने कहा: 'गुरूदेव, गलती हो गई, मैं यहां से कुछ भी नहीं ले जाऊंगा। बाहर जाकर किसी के पास नौकरी कर लूंगा।' तब गुरूजी ने कहा: 'नौकरी ही करनी है तो मेरे पास ही कर लो।'

राजा ने कहा: 'ठीक है, मुझे काम क्या करना होगा?' गुरूजी ने कहा: 'जो मैं कहूँ, वही करना होगा।' राजा ने गुरूजी के आदेश को स्वीकार कर लिया। गुरु जी ने उसको राज्य की सम्भाल का पूरा काम दे दिया। जो काम राजा पहले करता था वही पुन: उसके हिस्से में आ गया।

अंतर सिर्फ यह रहा कि अब वह राजा बनकर कार्य नहीं सम्भाल रहा था, बल्कि गुरूजी का सेवक बनकर निमित्त भाव से कार्य करता था। अब उसे अच्छी तरह नींद भी आने लगी, खाना भी भरपूर खाता और खुश रहता, उसके सामने कोई समस्या भी नहीं रहती।

जीवन प्रभु पदत्त एक सौगात है, हमें यूं ही इसे गंवाना नहीं है। बस उसी जीवन में तौर-तरीका बदलकर जीना है, तब ये जीवन यात्रा एक मौज में तबदील हो जायेगी। जीने का अंदाज़ बदलो, ज़िन्दगी संवर जायेगी।

कुछ सप्ताह बाद गुरू जी ने राजा को बुलाकर पूछा: 'अब तुम्हें कैसा लगता है?' राजा ने कहा: 'अब मैं बहुत ही खुश हूँ। वही स्थान, वही कार्य पहले बोझ लगता था, अब खेल लगता है। निश्चिंतता आ गई है, ज़िम्मेवारी का बोझ मुझ पर से उतर गया है। सर्व बंधनों से मुक्त हो गया हूँ।'

गुरू ने कहा: 'तुम तो वही कार्य कर रहे हो, इसमें क्या बदला जो तुम्हें ये कार्य अब बोझ नहीं लगता? बस यही तो तुम्हें समझने की ज़रूरत है कि तुमने अपनी ज़िम्मेवारियों को इतना तवज्जो दे दिया था और अपने ऊपर इसे इतना हावी कर लिया कि ये तुम्हारे लिए बोझ बन गया। तुम उसे अपना समझते रहे, उससे तुम्हारा मैं-पन जुड़ गया और वही मैं-पन ही तुम्हें बोझिल करता रहा। अब जब तुमने ये सब मुझे सौंप दिया और ट्रस्टी होकर इसे सम्भालने लगे तो यही कार्य तुम्हें खेल लगने लगा, क्योंकि अब ये तुम्हारा कार्य नहीं रहा, इसलिए तुम्हारा मैं-पन भी खत्म हो गया। अब ये तुम्हें खेल लगता है और खेल में तो खुशी मिलती है। इसलिए अब तुम हल्का महसूस कर रहे हो।' देखो, जीवन का यही सार है कि जो कुछ भी हमारे पास है, उसमें से मेरा-पन निकालकर, हम उसे ईश्वर की अमानत समझ कर रहते हैं तो हम हल्के हो जाएंगे और खुश भी रहेंगे। बोझ सम्बंधों और चीज़ों का नहीं होता है, मेरे-पन का होता है। अत: मेरे-पन को तेरे-पन में बदल दो। मेरा के स्थान पर तेरा कर दो। मेरा नहीं ईश्वर का, इस ईश्वरीय श्रीमत् को अपने जीवन में धारण करने से ही हम बंधनमुक्त हो सकेंगे और जीवन में हर पल खुशी, आनंद और हल्केपन की अनुभूति करेंगे।

अलबेलेपन से क्या मिलेगा...!

अलबेलापन -वाणी अर्थात् बोल - बोल के लिए अलबेलापन ज़्यादा है । इस पर विशेष अंडरलाइन करो। आगे बढ़ने वालों के लिए तथा सभी के लिए तीन बातें - 'कम बोलो, धीरे बोलो और मधुर बोलो'। व्यर्थ बोलने वाले की निशानी है कि वह ज़्यादा बोलेगा, मजबूरी से समय प्रमाण, संगठन प्रमाण अपने को कंट्रोल करेगा, लेकिन अंदर ऐसा महसूस करेगा जैसे कोई ने शान्ति में चुप रहने के लिए बांधा है।

1. व्यर्थ बोल से बड़े ते बड़ा नुकसान क्या?

एक तो शारीरिक एनर्जी समाप्त होगी क्योंकि इसमें हमारी बहुत ऊर्जा खर्च होती है और दूसरा, समय व्यर्थ जाता है।

2. व्यर्थ बोलने वाले की आदत क्या होगी?

छोटी सी बात हो, लेकिन वो उसे बहुत लम्बा-चौड़ा करेगा और बात करने में माहिर होगा।

- अलबेला रहने वाले को सेना का सैनिक नहीं कहा जायेगा।

- दृढ़ता और सिर्फ दृढ़ता चाहिए कि मुझे करना ही है। दूसरों के अलबेलेपन का प्रभाव हमपर नहीं पड़ना चाहिए। आपकी दृढ़ता का प्रभाव औरों पर पड़ना चाहिये। दृढ़ता की शक्ति श्रेष्ठ है, ना कि अलबेलेपन की शक्ति।

अलबेलापन या आलस्य छोटा कुम्भकरण

कई दोस्त कहते हैं, थोड़ा सा अलबेलेपन के, आलस्य के, ढ़ीले पुरुषार्थ के डनलप के तकिये में आराम कर लें। समय पर ठीक हो जायेंगे। पक्का कराते हैं, देखना हम समय पर बहुत नम्बर आगे ले लेंगे। पर सावधान! समय पर जागे और समय प्रमाण परिवर्तन किया तो यह कोई बड़ी बात नही है। समय के पहले परिवर्तन किया तो ही आपको पुरुषार्थ की माक्स मिलेगी, अन्यथा नहीं। तो टोटल रिज़ल्ट में अलबेलेपन या आलस्य की नींद के कारण धोखा खा लेंगे। यह भी कुम्भकरण के नींद का अंश है। बड़ा कुम्भकरण नहीं है, छोटा है। पर उस कुम्भकरण का भी फिर क्या हुआ? अपने को बचा सका? नहीं बचा सका ना! तो यदि हम भी अलबेलेपन और आलस्य की नींद में छोटे कुम्भकरण बनकर सोते रहेंगे और समय व्यर्थ ही गंवा देंगे, तो अन्त समय में भी अपने को फुल पास के योग्य नहीं बना सकेंगे।

रीवा-म.प्र.। विन्ध्य प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री पंडित शम्भूनाथ शुक्ल की स्मृति में अवधेश प्रताप सिंह विश्व विद्यालय के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में खनिज साधन,वाणिज्य,उद्योग रोजगार,प्रवासी भारतीय मंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने ब्र.कु. निर्मला को मानवता के प्रति उत्कृष्ठ कार्य हेतु 'सारस्वत सम्मान' से सम्मानित किया।

मुम्बई-डोम्बिवली। यूथ फेस्टिवल 'तरंग' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शकु दीदी, ब्र.कु. निकुंज, शिवसेना शहर प्रमुख राजेश मोरे, नगर सेवक रमेश म्हात्रे, आगरी महोत्सव अध्यक्ष गुलाब वझे, नगर सेवक जलंदर पाटील तथा अन्य।

रानीपरतेवा-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का उद्घाटन करते हुए जनपद पंचायत उपाध्यक्ष अवधराम साहू, डॉ. श्याम वर्मा, समाजसेवी एम.एल.ठाकुर, ब्र.कु.सुमन तथा अन्य।

फाजिलनगर-उ.प्र.। त्वचा रोग विशेषज्ञ डॉ. नरेश नागरथ को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात ब्र.कु.भारती, ब्र.कु.प्रीति, ब्र.कु.संजय, ब्र.कु.सूरज, वकील जायसवाल, ब्र.कु. उदयभान, पशुपतिनाथ जायसवाल, ब्र.कु.उमेश तथा अन्य समूह चित्र में।

मंडी-हि.प्र.। 'खुशनुमा जीवन जीने की कला-आध्यात्मिकता' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उपायुक्त मदन चौहान, ब्र.कु.उषा, ब्र.कु.शीला व ब्र.कु.शिखा।

बड़ौत-उ.प्र.। शहर के प्रतिष्ठित डॉक्टर मनीष तोमर को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रवेश बहन।

जैविक और यौगिक खेती को बढ़ाने का करें प्रयास

चार दिवसीय किसान सम्मेलन में नेपाल तथा देश के हर प्रांत से पहुंचे नौ हज़ार किसान, केन्द्रीय कृषि मंत्री ने किया उद्घाटन

शांतिवन। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री राधामोहन सिंह ने ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग की ओर से आयोजित किसान सम्मेलन का शुभारंभ किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि हमारा देश किसानों की बदौलत खाद्यान उत्पादन में आत्मनिर्भर हुआ है। उन्होंने कहा कि अब रासायनिक खादों के कम उपयोग तथा जैविक और यौगिक खेती को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कृषि संबंधित सपनों को पूरा करने में ब्रह्माकुमारी संस्थान मुख्य भूमिका निभा रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर यह संस्थान अभियान यात्राओं के द्वारा किसानों में जागृति का प्रयास कर रहा है। इससे निश्चित तौर पर किसानों के अच्छे दिन आयेंगे। राजस्थान सरकार तथा यहां के कृषि विभाग ने इस क्षेत्र में अच्छी तरक्की की है। इससे कृषि सहज हो रही है। संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि हमारा देश कृषि प्रधान देश है। किसानों को बुरी आदतों जैसे व्यसन आदि से बचाना है तो उसके लिए आध्यात्मिक शिक्षा अति आवश्यक है।

कृषि मंत्री राधामोहन सिंह किसानों को सम्बोधित करते हुए। साथ हैं ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. सरला, राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर तथा उपाध्यक्ष ब्र.कु. राजू।

संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर ने कहा कि किसान जैविक और यौगिक खेती का उपयोग करें, ताकि कम लागत में अच्छी उपज हो। ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. सरला तथा उपाध्यक्ष ब्र.कु. राजू ने कहा कि पिछले कई सालों से ग्राम विकास प्रभाग गोकुल गाँव बनाने की दिशा में कार्य कर रहा है। इसके लिए प्रभाग द्वारा किसान जागरुकता अभियान का आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर किया जा रहा है, और उसका सकारात्मक परिणाम सामने आ रहा है। देश में जैविक और यौगिक खेती के प्रति किसानों का रुझान बढ़ रहा है जो कि खुशी की बात है। ब्र.कु. सपना समेत कई लोगों ने भी विचार व्यक्त किये।

तपोवन में हो रही जैविक व यौगिक खेती के अवलोकन के अवसर पर निदेशक ब्र.कु.भरत, कलेक्टर संदेश नायक, एस. पी. ओम प्रकाश चौहान, एस. डी.एम. सुरेश ओला, शांतिवन प्रबंधक ब्र.कु.भूपाल, यू.आई. टी. चेयरमैन सुरेश कोठारी, पालिकाध्यक्ष सुरेश सिंदल समेत अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

- केंद्रीय किसान मंत्री राधामोहन सिंह शांतिवन में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सौर ऊर्जा प्रकल्प का अवलोकन कर अभिभूत हुए, और इसे देश के लिए बेहतर विकल्प बताया।
- इसके साथ ही तपोवन में हो रही जैविक और यौगिक खेती का भी अवलोकन किया तथा इस प्रयास को सराहा। इसे धरती माँ की बेहतर सेहत के लिए व मनुष्य के सुस्वास्थ्य के लिए बहुत ज़रूरी बताया।

शहर को स्वर्ग का मॉडल बनाएं : शिवानी

- बाह्य स्वच्छता के साथ मन को भी स्वच्छ बनायें
- स्वच्छ सात्विक भोजन का ही करें सेवन
- मेडिटेशन को जीवनचर्या में करें शामिल

दीप प्रज्वलित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी, सिन्धी समाज के अध्यक्ष रमेश सामधानी, सिटी केबल डायरेक्टर सत्यनारायण जयसवाल, ब्र.कु. हेमलता, ब्र.कु. जयंती तथा अन्य गणमान्य लोग।

उज्जैन-म.प्र। लोग महाकाल दर्शन, परमात्म शक्ति, असीम शान्ति के वायब्रेशन्स लेने की मंसा से उज्जैन आते हैं। यहां इसलिए आते हैं क्योंकि उन्हें शान्ति मिलती है। तब तो यहाँ सभी शान्ति से रहते होंगे? मैं कहीं बाहर गई थी, जहाँ सिर्फ कारपेट ही मिलते हैं, पूरे देश में वहीं से सप्लाई होते हैं। वहाँ हर घर में कारपेट ही मिलते हैं, तो यहाँ हर घर में शान्ति होनी चाहिए। कलयुग में भी यहाँ ऐसा होना चाहिए कि लोग यह कहें कि स्वर्ग का मॉडल देखना हो तो उज्जैन चलें। उक्त विचार जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी ने क्षीरसागर मैदान में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये।

उन्होंने जीवन प्रबंधन के उपाय बताते हुए कहा कि हर व्यक्ति एक दीये के समान है, जो प्यार, सम्मान और विश्वास देता है। देवी-देवता इसीलिए पूजनीय होते हैं क्योंकि वे देने वाले हैं। हम लोगों को प्यार, सुख, सम्मान और शान्ति देना शुरु करेंगे तो अच्छे विचारों का दीप जलेगा। यदि हमारे शुभ विचारों का दीप बुझने लगे तो ज्ञान का घी उसमें तुरंत डालें।

मन को बनाएं स्वच्छता में नंबर वन : उन्होंने कहा कि अगर मन स्वच्छ नहीं तो बाहर स्वच्छ नहीं बन सकता। पहले मन को स्वच्छ बनाना होगा।

गुस्सा, नाराज़गी, नफ़रत की भावना, ये ऐसे कचरे हैं जो दिखते नहीं। मन को कंट्रोल कर इनको साफ़ करना पड़ेगा। न दिखने वाले कूड़े को साफ़ करने के लिए रोज़ मेडिटेशन करें, चेक करें कि कौन से विचार चल रहे हैं। इनको दूर करने का संकल्प लें।

किचन से दूर हो सकती किच-किच : किचन, रसोई घर ऐसी पवित्र जगह है जहाँ से पूरे घर में पॉज़ीटिव एनर्जी पहुंचाई जा सकती है। खाना बनाते समय यह विचार करें कि हम सब स्नेह से रहें, मेरा घर स्वर्ग है, बच्चे अच्छी पढ़ाई करें, शरीर निरोगी हो। जैसा अन्न खायेंगे वैसा मन बनेगा। टीवी ऑन करके, अखबार पढ़ते खाना खायेंगे तो वैसे ही विचार हमारे मन में आयेंगे।

घर परिवार में ऐसे आएगी शान्ति : उन्होंने कहा कि गुस्सा हमारा स्वभाव नहीं, बीमारी है। इसे ठीक करना होगा, नहीं तो यह बढ़ता ही जाएगा और हमारा स्वभाव बन जाएगा।

हर व्यक्ति का संस्कार और व्यवहार अलग होता है। किसी को डांटने या गलती के लिए बार-बार टोकने से वह नहीं सुधरते। छोटी-छोटी बातों से ही जीवन में तनाव आता है।

संस्कार बदलने के लिए राय नहीं दें, प्यार और स्वयं के सुधार से ये बदलते हैं। रोज़ संकल्प करें कि मैं खुद एक शांत आत्मा हूँ।

ये तो सात्विक नगरी है : उन्होंने आश्चर्य ज़ाहिर करते हुए कहा कि उज्जैन एक सात्विक नगरी है, तो यहाँ कोई तामसिक भोजन कैसे खा सकते हैं! जब एक जीव मारा जाता है तो उससे नफरत की वायब्रेशन आती है और जब प्लेट में आता है तो कहते हैं प्रोटीन है।

जब किसी का देहान्त हो जाता है तो हमारे घर में भोजन नहीं बनता और किचन में, फ्रिज में किसकी बॉडी रहती है? शमशान के नज़दीक घर नहीं लेते और भोजन तामसिक, कैसे संभव है!

सुबह उठकर रोज़ अपने मन को सकारात्मक विचारों से भरें। इससे मोबाइल की तरह शरीर की बैटरी दिनभर चार्ज रहेगी, नहीं तो दूसरों का फोन मांगकर काम चलाना पड़ेगा।

साथ ही कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु. शिवानी ने सभी को पॉज़ीटिव एनर्जी देते हुए गहन राजयोग का अभ्यास कराया।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SRO/9623/18-20, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2018-20, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 3rd Jan 2018
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं आशीर्वाद प्रेस द्वारा मुद्रित।